चन्दामामा
अप्रैल १९८१

कॅमल

वॉटर कलर्स और पोस्टर कलर्स

मीना का जन्मदिन था. राजू के लिए यह खुशी का मौका था. नेहू, विनय, रेखा, अशोक सभी बच्चे शानदार तोहफे लाने वाले थे.

राजू की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या दे. वह कोई खास चीज़ देना चाहता था, जो सबसे अलग नज़र आये.

उसने बहुत देर तक इस बारे में सोचा. अचानक उसके दिमाग में एक बात आई.

उसने सोचा– क्यों न एक अच्छा सा मुखौटा बना कर दिया जाए? जिसकी टोपी में हरी पट्टियाँ हों, गालों पर गुलाबी रंग और लाल-लाल होंठ.

उसने जल्दी-जल्दी में गत्ते का एक टुकड़ा लिया और ब्रश से उस पर तेज़ हाथ चलाये. फिर क्या था— मुखौटा तैयार हो गया. उसने उसे काटकर रख लिया.

मीना ने जब उस रंग-बिरंगे तोहफे को देखा, तो वह खुशी से नाच उठी. हर कोई राजू और उसके तोहफे की तारीफ़ कर रहा था. अगर राजू रंगने का काम कर सकता है तो तुम क्यों नहीं?

कॅम्लिन प्रायव्हेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिविज़न,
बम्बई-४०० ०५९.

कैम्लिन अनब्रेकेबल पेन्सिल बनानेवालों की ओर से

VISION 791 HIN

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 18 (Hindi)

1st Prize: Ku. Nidhi Kukreja, Chhindwara. *2nd Prize:* Supriya Datt, Kushwagar. *3rd Prize:* Jahid Jamia, Gujarat. *Consolation Prizes:* Hema Gaur, New Delhi-49; Rajendra Panigrahi, Balreketa-8; Man Mohan Bhatia, Delhi-110 006; Ajay Chaakan, Agra-282 002; S. Tharkeswar Patnaik, Balasore.

वुडवर्ड्स ग्राइप वाटर

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "धर्म मार्ग" है।

"उचित दण्ड" नामक कहानी के द्वारा हमें शिक्षा मिलती है कि दान करने की शक्ति रखते हुए कंजूस बन कर जीनेवाला व्यक्ति अगर कृत्रिम मार्गों के द्वारा दानी कहलाना चाहता है तो वह कैसे मज़ाक़ का कारण बन जाता है।

अमर वाणी

नाभ्युत्थान क्रिया यत्र नालापा मधुराक्षरा ।
गुणदोष कथानैव, तत्र हर्म्ये न गम्यते ।।

[अतिथियों का स्नेह पूर्वक परामर्श करके उनके कुशल-क्षेम जहाँ पूछे नहीं जाते है, ऐसे परिवार में भूल से भी सही जाना नहीं चाहिए ।]

वर्ष : ३२ अप्रैल १९८१ अंक : ८

एक प्रति : १-५० :: वार्षिक चन्दा : १८-००

आत्म संतोष

भीमपुर का निवासी भीमदास हमेशा उदास रहता था और रामपुर का निवासी रामदास सदा प्रसन्न रहा करता था। यह खबर मालूम होते ही रामदास की खुशी का पता लगाने के ख्याल से भीमदास रामपुर पहुँचा। भीमदास ने रामपुर पहुंचकर देखा कि रामदास खाट पर लेटा हुआ है और उसके पैर में बड़ी पट्टी बंधी हुई है।

भीमदास ने जब रामदास से इसका कारण पूछा, तब उसने कहा–"महाशय, मैं अपने खेत में काम करते फिसल कर गिर पड़ा। कहा जाता है कि पैर की एक हड्डी टूट गई है। इसलिए मुझे दो महीने तक हिले-डुले बिना खाट पर पड़े रहना होगा।"

"उफ़! बेचारे, आप को बड़ी तक़लीफ़ होती होगी!" भीमदास ने कहा।

"इसमें तक़लीफ़ की क्या बात है! अगर ऐसी कोई घटना न होती तो मुझे आराम करने का मौक़ा न मिलता। मेरे मन में कई दिनों से कालिदास का मेघ संदेश पढ़ने की इच्छा थी, वह इच्छा अब पूरी हो रही है। इसलिए मुझे बड़ी खुशी है।" रामदास ने जवाब दिया। इतने में रामदास का बेटा वहाँ पर आ पहुँचा और आवेश में आकर बोला–"बाबूजी, सोमदास आप को नाहक़ गालियाँ दे रहा है।"

"गालियाँ दे रहा है तो देने दो, इससे हमारा नुक़सान ही क्या है?" रामदास ने शांत स्वर में जवाब दिया।

"आपको निखट्टू और नालायक़ बताते हैं!" रामदास के बेटे ने फिर कहा।

"अगर वह कहता है तो कहने दो, उस से कह दो कि मैं निखट्टू और नालायक़ ही हूँ।" रामदास ने कहा।

"वह अंट-संट बकता है, इसे सुन कर भी आप चुप रहते हैं तो इसका मतलब आप नालायक़ ही हैं न, बाबूजी!"

"अगर में निखट्टू और नालायक़ हूँ तो उसके कहने में गलती क्या है, बेटे?"

"वाह, क्या उसके कहने मात्र से ही आप निखट्टू और नालायक़ बन जायेंगे?" लड़के ने खीझ कर कहा।

"ऐसी हालत में उसके कहने से हमारा बनता-बिगड़ता क्या है, बेटे?"

"कुछ बनता-बिगड़ता भले ही न हो, पर हमें चुप क्यों रहना चाहिए?"

"बेटे, में तुमसे सीधा सवाल पूछता हूँ। वह आखिर ऐसा क्यों कहता है? आज तक तो उसने मुझे कभी कुछ न कहा था न?"

"एक जमाने में हमारे पास उससे कम खेत थे, अब उससे कहीं ज्यादा अमीर हो गये। इसीलिए वह आप से जलता है!"

"अब समझ गये हो न? कोई भी आदमी बिना वजह के गालियाँ सुनाता है तो इसका मतलब है कि हम अच्छी हालत में हैं। इस पर हमें खुश होना चाहिए," रामदास ने समझाया।

"आप तो हर बात को सहन करते जाते हैं।" यों कहकर रामदास का बेटा उदास होकर वहाँ से चला गया। इसके बाद रामदास ने भीमदास से पूछा—"महाशय, गहराई के साथ सोचने पर इस संसार में चिंता करने की कोई बात नहीं है, यह सत्य मैंने अपने अनुभव से जान लिया है। आप इसे मानते हैं या नहीं?"

भीमदास ने गद्‌गद् कंठ से जवाब दिया—"आप खाट पर पड़े हुए हैं, फिर भी आपकी पत्नी मन लगा कर आपकी देखभाल कर रही है। आवेश में आने के बावजूद भी आपका बेटा आपकी हर बात को मानता है। आपके जैसे चोट खाकर अगर मैं खाट पकड़ लेता, तो मेरी पत्नी मेरी सेवा न करती, मेरा बेटा मेरी छोटी सी बात का भी पालन नहीं करेगा! मैं अपनी बदक़िस्मती पर दुखी हूँ!" यों कहकर भीमदास रामदास से विदा लेकर अपने गाँव लौट गया।
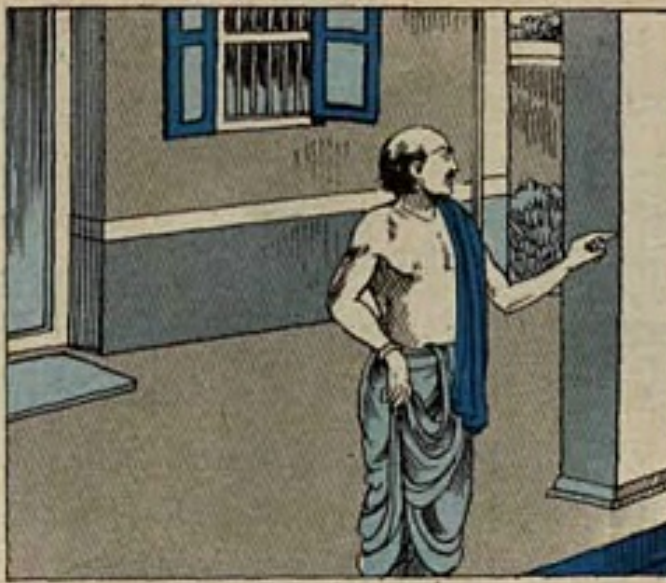
उचित दण्ड

एक गाँव में निहाल सिंह नामक एक धनी किसान था। वह अव्वल दर्जे का कंजूस था। इस वजह से कोई भिखारी भी उसके द्वार पर भीख मांगने के लिए कभी जाता न था।

एक साल पानी न बरसने की वजह से उस प्रदेश में बड़ा भारी अकाल पड़ा। गाँव के धनी किसानों ने अपनी हैसियत के मुताबिक़ अनाज वसूल करके गाँव भर के गरीबों में बांटना चाहा। इस सिल-सिले में उन लोगों ने निहाल सिंह के घर जाकर सारी बात समझाई और यथाशक्ति अनाज देने की प्रार्थना की।

इस पर निहाल सिंह गुस्से में आकर बोला–"यह तो अपनी-अपनी क़िस्मत की बात है! मैंने मेहनत करके जो कुछ कमाया वह सब क्या ऐसे निखट्टुओं में बाँटने के लिए ही है? जाइये, आप लोग कृपया आइंदा मुझसे मदद मांगने मेरे द्वार पर न आइयेगा।"

लोगों ने सोचा कि इस कंजूस आदमी के साथ तर्क करने से कोई फ़ायदा है नहीं, यों सोचकर वे लोग मन ही मन निहाल सिंह को गालियाँ सुनाते वहाँ से चले गये।

इस घटना के थोड़े दिन बाद उस गाँव मे एक साधु आया और राम मंदिर में ठहरा। वह सारा दिन पूजा और ध्यान में बिता देता था। रात को मंदिर में आनेवाले लोगों को पुराण कथाएँ सुनाता और लोगों के संदेहों का निवारण करता था।

साधू दित भर में सिर्फ़ चार-पांच केले खाता और थोड़ा दूध पी लेता। इससे बढ़कर कोई कुछ देता तो उसे अपने हाथ से छूकर यही जवाब देता–"ये सब मेरे लिए किसलिए? वापस लेते जाइये।"

गायत्री देवी

साधू के इस व्यवहार से गाँववालों में उसके प्रति बड़ी श्रद्धा और भक्ति पैदा हुई। इस कारण उसके मना करने पर भी लोग भेंट-उपहार लाने लगे।

रेशमी कपड़े बुननेवाले गजाधर नामक एक जुलाहे ने साधू को भक्ति पूर्वक एक रेशमी धोती भेंट की, पर साधू ने उसे छूकर वापस ले जाने को कहा।

गहने गढ़नेवाले सुनार गुरुराज ने साधु को सोने के कर्ण कुंडल भेंट करना चाहा, मगर साधु ने उन पर पानी छिड़का कर वापस कर दिया।

गाँव के सबसे बड़े व्यापारी ने बहंगियों में भारी उपहार लाकर साधू को साष्टांग प्रणाम किया, साधू ने उन पर भी अपने कमण्डलु का जल छिड़क कर वापस कर दिया।

इस वजह से गाँववालों में साधू के प्रति और ज्यादा श्रद्धा-भक्ति पैदा हुई। साथ ही गाँव में यह प्रचार होने लगा कि साधू के आशीर्वाद पानेवाले लोगों का बड़ा उपकार हो रहा है।

निहाल सिंह ने जब ये सारी बातें सुनीं, तब उसके दिमाग में यह विचार आया कि अब उसे यह साबित करने का अच्छा मौक़ा मिला है कि वह एक कंजूस नहीं है और योग्य साधू-महात्माओं के लिए तो वह भारी उपहार तक श्रद्धापूर्वक भेंट देने से पीछे नहीं हटता। साथ ही वह जो

उपहार देगा, उन्हें वापस लाया जा सकता है।

यों विचार कर निहालसिंह एक गाड़ी में धान के बोरे भर कर, नये वस्त्र, फल तथा एक संदूक में चांदी के सिक्के भरकर साधू के पास पहुँचा, साष्टांग दण्डवत् करके बोला–"साधू महाराज! आप जैसे महात्माओं के दर्शन करने का मतलब साक्षात् भगवान के दर्शन करने के बराबर है! कहा जाता है कि महात्माओं के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिए! इसलिए आप कृपया मेरे उपहार स्वीकार करके मुझे धन्य बनाइयेगा!"

साधू ने उस कंजूस निहाल सिंह के बारे में पहले ही सारी बातें सुन रखा था। वह उसकी चाल भी समझ गया! इसलिए निहाल सिंह से बोला–"बेटा, आप की भक्ति प्रशंसनीय है; आज से मेरा व्रत भी समाप्त होने को है। इसलिए में आप के इस उपहार को स्वीकार करता हूँ।" यों कहकर साधू उठ खड़ा हुआ। गाड़ी में भरे उपहारों पर अपने कमण्डलु का जल छिड़का दिया।

साधू की बातें निहाल सिंह की समझ में न आईं। वह कुछ घबराया हुआ सा था। तभी साधू ने वहाँ पर खड़े हुए भक्तों को देखकर कहा–"बेटे! तुम लोग खड़े-खड़े देखते क्या हो? इसी वक़्त इस भक्त के द्वारा समर्पित उपहारों को ले जाकर गरीबों में बाँट दो। इसने बड़ी श्रद्धा के साथ जो उपहार मुझे भेंट में दिये हैं, उन्हें वापस करके इसका दिल मैं दुखाना नहीं चाहता।"

साधू के मुंह से ये बातें सुन निहाल सिंह भौंचक्के हो देखता ही रहा। तभी लोगों ने गाड़ी में भरे उपहार उतार कर राम मंदिर के मण्डप में पहुँचा दिया। उस दिन शाम को निहाल सिंह चिंता के मारे दुपट्टा ओढ़े अपने घर में लेटा हुआ था। इधर राम मंदिर के सामने उसके सारे उपहार गाँव के गरीबों में बाँट दिये गये।

[११]

[चतुर्नेत्र और समरसेन पहाड़ पर थे। उस वक्त उस प्रदेश में आनेवाले एकाक्षी मांत्रिक ने कुंभांड को रोका। समरसेन ने कुंभांड तथा उसके अनुचरों पर हमला किया। उसमें कुछ जंगली लोग मर गये, खून की गंध पाकर भेड़ियों का दल उधर आ निकला, तब सभी लोग तितर-बितर हो गये। बाद–]

समरसेन तथा उसके सैनिक थोड़ी दूर भागकर एक जगह रुक गये। दूर पर कुंभांड के अनुचर जंगलियों की चिल्लाहटें सुनाई दे रही थीं। समरसेन ने भांप लिया कि वे लोग समरसेन के दल का पीछा करना छोड़ भेड़ियों से अपनी जान बचाने के लिए नीचे के जंगल की ओर अंधाधुंध भाग रहे हैं। पर शक्तिशाली मांत्रिक एकाक्षी और चतुर्नेत्र का कहीं पता न था। दूर पर भेड़िये तो भयंकर रूप से गर्जन कर रहे थे।

अपने थके सैनिकों के साथ थोड़ी दूर आगे बढ़ कर समरसेन रुक गया और एक पेड़ के नीचे आराम करने लगा। सोच-विचार करने पर समरसेन समझ गया कि कुंभांड भी धन के ढेरों से लदी नाव पर क़ब्जा करना चाहता है। इसका मतलब है कि अब उस नाव के वास्ते तहतहान

सोच-समझ कर यह निर्णय कर लिया है कि इस द्वीप को छोड़कर जाना हमारे लिए हितकर है। बार-बार इसकी फ़िक्र करने से कोई प्रयोजन नहीं है। असली बात यह है कि इस द्वीप को छोड़कर जाने के लिए रास्ता क्या है ?"

सैनिक भी खुद यह नहीं जानते कि उस द्वीप को छोड़ कर जाने का मार्ग क्या है। वे यह भी नहीं जानते कि समुद्र के तट पर छोड़ी गई नावों की हालत क्या है? इसके साथ खास कर एकाक्षी मांत्रिक तथा राजद्रोही कुंभांड के द्वारा होनेवाले खतरे से बचना जरूरी है। उनकी आँख बचा कर भाग जाना है।

वाले चार लोग हो गये हैं – समरसेन, कुंभांड, एकाक्षी और चतुर्नेत्र।

समरसेन यों विचार कर रहा था, पर उसके सैनिक जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी अपने द्वीप को लौटने की सोच रहे थे। एक सैनिक ने कहा–"सेनापतिजी, हमें इस भयंकर द्वीप को जल्दी छोड़कर जाना ज्यादा अच्छा होगा। आप कृपया विलंब किये बिना इस वास्ते उचित प्रयत्न कीजिए।"

बाकी लोगों ने स्वीकृति सूचक सर हिलाये। इसे भांप कर समरसेन ने सैनिकों को समझाने के स्वर में कहा–"तुम लोग जल्दबाजी न करो। हमने बहुत पहले ही

ये बातें सुन कर एक और सैनिक ने पूछा–"यहाँ से हमारे बचकर भाग जाने में क्या चतुर्नेत्र हमारी मदद करने के लिए तैयार है या नहीं ?"

समरसेन की समझ में न आया कि इस सवाल का क्या जवाब दे? क्या चतुर्नेत्र से यह निवेदन करना उचित होगा कि हमें इस भयंकर द्वीप से बचाकर कुंडलिनी द्वीप में पहुँचा दे? अलावा इसके समरसेन के मन में यह भी संदेह पैदा हुआ कि चतुर्नेत्र के लिए भी यह काम संभव है या नहीं!

जब सभी लोग कुछ इसी प्रकार के विचारों में डूबे हुए थे, तभी कहीं से सर्र

की आवाज़ के साथ एक बाण आया और समरसेन के सर के एक फुट की ऊँचाई पर तेजी के साथ जाकर एक पेड़ के तने में जा चुभा।

दूसरे ही क्षण समरसेन चौकन्ने हो उछलकर खड़ा हो गया और घबराये हुए स्वर में बोला–"तुम सब लोग बच कर पेड़ों के पीछे छिप जाओ। द्रोही कुंभांड कहीं छिपे रहकर हमारा अंत करने की सोच रहा है!" यों कहकर वह निकट के पेड़ों के समूह की ओर दौड़ पड़ा।

सैनिकों ने अपने नेता का अनुसरण किया। इसके दो क्षण बाद उन्हें ये चिल्लाहटें सुनाई दीं–"पकड़ो! जान के साथ मत छोड़ो।"

उसी समय भाले धारण किये हुये जंगली लोग जंगल को गुंजाते हुए पेड़ों की ओट से बाहर आने लगे।

समरसेन ने भांप लिया कि वे लोग ख़तरे में फंस गये हैं। उसे यह भी लगा कि अपने साथ के सैनिकों के साथ उन्हें घेरने वाले जंगलियों का सामना करना कोई आसान काम नहीं है। साथ ही कुंभांड जंगलियों को चेतावनी देते हुए उनका पीछा कर रहा है। इसलिए सबसे पहले उसका काम यह होना चाहिए कि वह अपने साथियों के प्राण बचावे, तब मौक़ा पाकर दुश्मन का अंत करे।

झुरमुटों के जैसे फैले पेड़ों की छाया में छिपते, मौक़ा मिलने पर दौड़ते हुए समर

सेन और उसके सैनिक थोड़ी दूर आगे बढ़े। तब तक चन्द्रमा की रोशनी लुप्त होकर अंधेरा फैलने लगा था। इसलिए कुंभांड की आंख बचाकर भागने में समरसेन को संभव हुआ।

दौड़ते-दौड़ते आखिर समरसेन का दल एक पहाड़ी गुफा के पास पहुँचा। कुंभांड तथा जंगलियों की चिल्लाहटों से ऐसा मालूम हो रहा था कि वे लोग अभी तक उन का पीछा कर रहे हैं। तब समरसेन को लगा कि और आगे भागने के बजाय नजदीक़ के किसी अंधेरी गुफा में पहुंच कर वह रात वहीं पर बिताना ज्यादा मुनासिब होगा।

यों विचार कर समरसेन सामने वाली गुफा की ओर परख कर देख रहा था, तब सैनिकों ने अपने नेता के विचारों को भांप लिया और चार-पांच क़दम उस ओर बढ़ाये। तभी समरसेन ने चिल्लाकर उन्हें सचेत किया—"तुम लोग जल्दबाजी न करो, थोड़ा रुक जाओ। जल्दबाजी में आकर उस गुफा के अन्दर पहुँचना शायद खतरे से खाली न होगा। उस गुफा में सिंह जैसा कोई खूंख्वार जानवर हो सकता है न?"

इस पर एक सैनिक ने पीछे की ओर मुड़कर देखते हुए पूछा—"सेनापतिजी! तब तो हम लोग क्या करें? कुंभांड जंगलियों को साथ ले हमारा पीछा करते हुए जो आ रहा है?"

"सिंह या कोई दूसरा खूंख्वार जानवर गुफा में है या नहीं, हम इस बात का कैसे पता लगावे? दूसरी गुफा में भी पहुँच जाय तो वहाँ पर भी यह समस्या पैदा होगी न?" एक और सैनिक ने अपना संदेह प्रकट किया।

ये सवाल सुनकर समरसेन खिल-खिला कर हंस पड़ा। अगर वह पहले यह चेतावनी न देता तो ये सैनिक अब तक गुफा में घुस गये होते! अगर गुफा में शेर या बाघ होता तो ये लोग नाहक़ उसके शिकार बन गये होते।

यों विचार कर समरसेन धनुष और बाण लेकर बोला–" मैं गुफा के अन्दर एक बाण छोड़ देता हूँ ! अगर गुफा में कोई खूँखार जानवर होगा तो वह अचानक हम पर हमला कर बैठेगा । खबरदार !"

सैनिकों को यों सावधान करके समरसेन ने गुफा के अन्दर बाण चलाया । दूसरे ही क्षण उसकी कल्पना सच साबित हुई । भयंकर रूप से गर्जन करते हुए एक सिंह उस अंधेरी गुफा में से बाहर कूद पड़ा । तलवार खींच कर तैयार खड़े सैनिकों ने एक पल की भी देरी किये बिना उसका सामना किया । दो-तीन बार तलवार के वार खाकर सिंह और भी भयंकर रूप से गरजते हुए जंगल में भाग गया ।

उस वक़्त समरसेन एक सैनिक के हाथ से तलवार लेकर गुफा की ओर बढ़ा । बाक़ी सैनिकों ने उसका अनुसरण किया । जब सब लोगों ने गुफा के भीतर प्रवेश किया, तब उन्हें कोई कराहट सुनाई दी ।

समरसेन ने झट एक क़दम पीछे हटाकर सैनिकों से कहा–"लगता है कि गुफा के अन्दर एक घायल सिंह छिपा हुआ है । वह किस हालत में है, इसे जाने बिना हम लोगों का भीतर प्रवेश करना खतरे से खाली नहीं है । इसलिए तुम लोग आग जला दो ।"

तभी दो सैनिकों ने चकमक से आग जलाई । फिर एक मशाल जलाकर उसे हाथ में ले समरसेन गुफा के अन्दर चला गया और भीतर के हिस्से को सावधानी के साथ देखा । एक जगह त र की चोट खाकर छटपटाने वाला एक सिंह शावक और उसके पास ही गरजते हुए एक और सिंह शावक समरसेन को दिखाई दिये ।

"अब डरने की कोई बात नहीं है । तुम लोग अन्दर आ जाओ ।" यों कहते समरसेन गुफा के अन्दर चला गया ।

वह सिंह शावक जो घायल न हुआ था, धीरे से गुर्राते हुए गुफा के पीछे की ओर जाने लगा । समरसेन धीरे से सीटी

बजाकर गुफा के एक कोने में बैठ गया। तब तक सैनिक भी गुफा के अन्दर आ गये।

उस समय तक रात गहरी हो रही थी। कुंभांड और जंगली लोग समरसेन की खोज में सारा जंगल छान रहे थे। इसकी सूचना के रूप में जब तब उनकी चिल्लाहटें सुनाई दे रही थीं। अपने छिप जाने की जगह का पता न लगे, इस ख्याल से समरसेन ने गुफा के सामने जलनेवाली आग को बुझा दिया।

गुफा के भीतर घना अंधेरा था। घायल सिंह शावक इस बीच मर गया। गुफा के पीछे चला गया सिंह शावक रह-रह कर गुर्रा रहा था, मानो वह उन्हें उकसा रहे हो। समरसेन को अब यह डर सताने लगा कि बाहर भागी गई सिंहिनी अपने बच्चों के वास्ते शायद फिर से आ जाय। यह शंका भी उसे परेशान करने लगी कि कुंभांड और जंगली लोग जंगल में अब तक उनकी खोज करते ही होंगे।

इन कारणों से समरसेन और उसके सैनिक अपनी आँखें खोले गुफा के भीतर बैठे रह गये। अचानक समरसेन के मन में एक संदेह पैदा हुआ। अगर कुंभांड उनका पता लगाकर अपने जंगली अनुचरों की मदद से गुफा के द्वार पर हमला कर बैठे तो उन्हें लड़ने का मौक़ा न मिलेगा और उन्हें अपने प्राणों के साथ हाथ धोना पड़ेगा; इसलिए यह विचार किया कि सैनिकों को निकट के पेड़ों पर पहरा देने के लिए नियुक्त करना उचित होगा।

इस विचार के आते ही समरसेन ने सैनिकों से कहा—" हम सब इस गुफा के अन्दर बैठे रहें और कुंभांड अचानक हम पर धावा बोल दे, तो हम मुसीबत में फंस जायेंगे। इसलिए तुम लोग पेड़ों पर चढ़ कर इस बात का पता लगा लो कि कुंभांड और जंगली लोग हमारी खोज किस प्रदेश में कर रहे हैं। अगर वे लोग इस ओर बढ़ते दिखाई दे तो हम दूसरी जगह के लिए खिसक जायेंगे!"

सैनिक अपने नेता का आदेश मिलते ही गुफा से बाहर निकल आये, नजदीक में घनी डालों वाले पेड़ पर चढ़ कर कुंभांड के दल की टोह लेने लगे।

समरसेन गुफा में अकेले ही बैठा रहा; उसे निकट से कोई बातचीत सुनाई दी। समरसेन ने अच्छी तरह से समझ लिया कि वह बातचीत उसके अनुचरों की नहीं है। कहीं कुंभांड के अनुचरों की हो, इस शंका को लेकर वह बिना आहट किये गुफा के द्वार तक पहुँचा और बाहर झांक कर देखा। वहाँ पर उसे कोई दिखाई न दिया। तब संतुष्टि पूर्वक सर हिला कर फिर गुफा के भीतर चला गया। तब उसे कोई बात-चीत साफ़ सुनाई देने लगी।

समरसेन को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह सोच कर उसने गुफा को अच्छी तरह से परखकर देखा कि कहीं गुफा के भीतर कोई गुप्त द्वार हो। जब उसे मालूम हुआ कि यह बातचीत गुफा के बाहर हो रही है, तब वह एकदम चकित रह गया। उसे इस बात का संदेह भी हुआ कि एक बड़े पहाड़ की एक छोटी गुफा के पीछे मानव कैसे पहुँच गये। कोई गुप्त द्वार हो, इस ख्याल से उसने गुफा के पीछे के हिस्से को परख कर देखा।

अचानक उसका हाथ एक छोटी-सी कील से जा लगा। उसे पकड़ कर समरसेन ने जोर से खींच डाला, तब शिला से बनाया गया एक अनोखा किवाड़ खुल गया। उस द्वार से चांदनी गुफा के अंदर घुस आई। वहाँ से थोड़ी दूर पर दो आदमी बातचीत करते दिखाई दिये, मगर उनकी पोशाकें जंगलियों जैसी नहीं थीं।

समरसेन सोच ही रहा था कि क्या किया जाय, तभी बाहर के लोगों की दृष्टि समरसेन पर पड़ गई। वे बिजली की गति के साथ समरसेन पर हमला कर बैठे और उसके हाथों को कसकर पकड़ लिया।

(और है)

धर्म मार्ग

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल हमेशा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, मैं नहीं जानता कि आप किस चीज़ को पाने के लिए ऐसी मेहनत करते हैं। लेकिन एक बात याद रखियेगा। उत्तम कार्य को साधने के लिए उत्तम मार्गों का ही अनुसरण करना होगा, लेकिन अन्यायपूर्ण मार्गों के द्वारा उत्तम कार्यों को साधने का प्रयत्न करना धर्म के विरुद्ध होता है। इसके उदाहरण के रूप में मैं आप को धर्मानंद नामक एक योगी की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों कहने लगा–"पुराने जमाने में श्रृंगगिरि नामक गांव में एक योगी रहा करते थे। उन्होंने कई दिनों तक अनेक

बेताल कथाएँ

गांवों का भ्रमण करके जनता से चंदा वसूल किया और एक विद्यालय की स्थापना की, उस विद्या केन्द्र में विद्यार्थियों को वेद और शास्त्रों के साथ पंडित ऐसे विषय भी पढ़ाते थे जिससे विद्यार्थियों में उत्तम चरित्र के साथ नैतिक मूल्यों के प्रति भी आदर का भाव पैदा हो जाय।

इस वजह से धर्मनंदन के द्वारा स्थापित विद्याकेन्द्र जल्द ही सारे देश में मशहूर हो गया। धर्मनंदन ने सोचा कि हर साल जनता से चन्दा वसूल करने के बजाय, उस देश के राजा से धन की सहायता पाना ज्यादा उचित होगा। इस ख़्याल से धर्मनंदन एक दिन राजा से सहायता पाने के लिए उन से मिलने गये।

राजा ने योगी के मुँह से सारी बातें सुनकर कहा—"आप तो इतने सालों से मेरी सहायता के बिना ही विद्याकेन्द्र चलाते आ रहे हैं न? ऐसी हालत में मैं बिलकुल समझ नहीं पाता कि खासकर इस वक़्त मुझसे धन की सहायता पाने की ज़रूरत क्यों आ पड़ी है? अगर यह बात सच है कि आप विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा दे रहे हैं तो जनता ही आप को उचित सहायता पहुँचा सकती है।"

धर्मनंदन ने अपने द्वारा स्थापित विद्या केन्द्र को उच्च दशा में पहुँचाना ही अपने जीवन का ध्येय माना। इस वास्ते उन्होंने पहले की भांति चन्दा वसूल करने के लिए बड़ी मेहनत करके कई गांवों का भ्रमण

किया, लेकिन कोई ज़्यादा फ़ायदा न रहा। इस हालत में योगी ने अत्यंत निराश हो कर अपने विद्यालय को बंद करने का निश्चय किया।

उन्हीं दिनों में गजसिंह नामक एक आदमी धर्मनंदन के विद्या केन्द्र में आ पहुँचा और उसने वचन दिया कि धर्मनंदन अपना विद्यालय कभी बंद न करे, उसके संचालन के लिए आवश्यक धन की वह सहायता करेगा। इस पर खुश होकर धर्मनंदन ने गजसिंह के बारे में विवरण पूछा।

गजसिंह ने जवाब में यही बताया– "महानुभाव, मेरे पेशे तथा मेरा व्यक्तिगत परिचय पाने से आप का विशेष लाभ न होनेवाला है। अपने वचन के मुताबिक़ में हर महीने विद्याकेन्द्र चलाने के लिए आवश्यक धन भेजा करूँगा।"

इसके बाद गजसिंह के द्वारा धर्मनंदन को हर महीने थोड़ा-बहुत धन मिलता रहा। गजसिंह के बारे में पूछ-ताछ करने पर यही पता चला कि गजसिंह उस प्रदेश का एक प्रसिद्ध आदमी है और साथ ही वह एक महान दाता है।

थोड़े दिन बीत गये। एक दिन धर्मनंदन ने गजसिंह के बारे में एक आश्चर्य जनक बात सुनी। वह यह कि उनकी मदद देनेवाला गजसिंह एक लुटेरे दल का नेता है। वह लूट-खसोट करके जो कुछ धन उसे प्राप्त हो जाता, उसी के द्वारा

वह दान-धर्म किया करता है। इस बीच राजा ने उसे पकड़ कर सौंपनेवाले को बहुत बड़ा इनाम देने की भी घोषणा की।

धर्मनंदन ने एक सप्ताह के अन्दर ही राजा को गर्जसिंह का पता बताया। राजा के सिपाहियों ने गर्जसिंह को बंदी बना कर कारागार में डाल दिया। धर्मनंदन ने राजा की जो सहायता की, इस पर खुश होकर राजा ने विद्याकेन्द्र को चलाने के लिए आवश्यक धन की मदद देने का उसे वचन दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन्, क्या धर्मनंदन का व्यवहार समुचित ही है? उन्होंने जिस विद्यालय को चलाना अपने जीवन का लक्ष्य माना, वह आर्थिक कठिनाइयों की वजह से जब बंद होने वाला था, तब गर्जसिंह ने उसकी मदद पहुँचाई। ऐसी हालत में ऐसे दाता के प्रति द्रोह करना क्या उचित है? लुटेरा होने पर भी लूट के धन को अगर वह एक अच्छे कार्य में लगा देता है, तो इसमें दोष ही क्या है? अलावा इसके जिस राजा ने विद्यालय के वास्ते धन की मदद देने से इनकार किया, उस राजा के हाथ में अपने मददगार को पकड़वा देना कहाँ तक उचित है? इसका समाधान जानते हुए भी न दोगे तो आपका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "धर्मनंदन का विद्या केन्द्र विद्यार्थियों को वेद, पुराण और शास्त्र पढ़ाने के लिए ही स्थापित नहीं हुआ है, बल्कि उसका आदर्श विद्यार्थियों में उत्तम चरित्र और नैतिक मूल्य स्थापित करना भी रहा है। इसलिए धर्मनंदन अपने लक्ष्य को साधने के लिए उसके विरुद्ध साधनों का अवलंबन करना निरर्थक साबित होगा। इस कारण किसी भी दृष्टि से देखें तो धर्मनन्दन का व्यवहार धर्म-विरुद्ध कभी कहा नहीं जा सकता है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

दो पिशाचिनियाँ

पच्चीस साल के युवक जनार्दन के सामने न कोई जिम्मेदारी है और न कोई काम-धंधा। वह किसी मंदिर के चबूतरे पर जा बैठता, जो कुछ छुट्टे पैसे दान में मिल जाते, उन्हीं से अपना पेट भर लेता। वह आलसी था, फिर भी उसके मन में काफी रुपये कमाने का लोभ बना रहा।

एक दिन वह गाँव के बाहर तालाब की मेंड़ पर एक पेड़ के नीचे लेट कर सो रहा था। कोई आहट पाकर उसकी आँखें खुल गईं। तालाब की मेंड़ पर दो पिशाचिनियाँ लड़ रही थीं। एक पिशाचिनी गोरी थी और दूसरी काली थी। जनार्दन पिशाचिनियों से डरता न था। उसने डांटा–"तुम लोग आधी रात के वक़्त लड़ती क्यों हो? किसी श्मशान में जाकर लड़ मरो।"

पिशाचिनियों ने जनार्दन के पैरों पर गिर कर गिड़गिड़ाया–"गुरु! आप ही हमारे झगड़े का निपटारा कीजिए?"

"क्या तुम लोग समझती हो कि मुझे कोई काम-धंधा नहीं है? जाओ, यहाँ से चली जाओ!" जनार्दन खीझ कर बोला।

"गुरु! गुरु! ऐसा मत बोलो। तुम जो भी फ़ैसला करोगे, उसे हम मान जायेंगी। बताओ, हम दोनों में से कौन ज्यादा खूबसूरत है?" दोनों पिशाचिनियों ने बिनती की। जनार्दन कोई जवाब देने जा रहा था, तभी गोरी पिशाचिनी बीच में दखल देते हुए बोली–"मैं एकदम सफ़ेद हूँ! मेरा बदन चमकता है। यह तो देखने में कोयले के टुकड़े जैसी है न?"

"सुनो, मैं श्याम रंग की हूँ तो क्या हुआ? मेरी देह एकदम दमक रही है न? यह तो आटे की गुड़िया जैसी है न?" काली पिशाचिनी ने पैरवी की।

हरि प्रसाद

पिशाचिनियों ने आपस में चर्चा की और दोनों एक-एक थैली भर रुपये जनार्दन के हाथ सौंप कर चली गईं।

उन रुपयों की गिनती करके जनार्दन बड़ा खुश हुआ। इसके बाद उसने अच्छे-अच्छे कपड़े बनाये और किराये पर एक घर भी लिया। एक भठियारिन के यहाँ अपने खाने-पीने का इंतजाम भी कर लिया।

दूसरी अमावस्या के दिन जब जनार्दन तालाब की मेंड़ पर आ पहुँचा, तब पिशाचिनियों ने प्रवेश करके जल्दी मचाई–"तुम अपना विचार जल्दी बताओ।"

"मैं तुम दोनों को यही पहली बार देख रहा हूँ। इतनी जल्दी में कैसे अपना विचार सुना सकता हूँ। तुम दोनों फिर आ जाओ।" जनार्दन ने कहा।

"हम दोनों फिर अगली अमावस्या के दिन यहाँ पर आ जायेंगी! इस बीच तुम अच्छी तरह से सोच-समझकर अपना विचार पक्का कर लो।" यों कहकर दोनों पिशाचिनियाँ वहाँ से जाने को हुईं।

"तुम लोग रुक जाओ। तब तक मैं भी शायद तुम्हारी जाति में मिल जाऊँगा। मैं तो एक बेकार आदमी हूँ। तब तक कैसे ज़िंदा रह सकता हूँ?" जनार्दन ने युक्ति पूर्वक जवाब दिया।

"सुनो, जल्दबाजी कोई अच्छी बात नहीं है। बुजुर्गों के कहे अनुसार तुम्हें तीन बार अच्छी तरह से देख लेना चाहिए!" जनार्दन ने अपना विचार बताया। पिशाचिनियाँ हताश होकर बोलीं–"तब तो हम अगली अमावस्या के दिन यहीं पर आ जायेंगी।"

"तब तक शायद मुझे इस गाँव को ही छोड़कर जाना पड़े। किराये के घरों की मुसीबतें तुम दोनों को शायद मालूम नहीं है। मकान का मालिक मुझे घर खाली करने को कह रहा है। बिना अपने निजी घर के मैं जी नहीं सकता।" जनार्दन ने साफ़ बता दिया।

पिशाचिनियों ने आपस में बहस की, तालाब से थोड़ी दूर पर एक अच्छे मकान

की सृष्टि करके जनार्दन को दे दिया। जनार्दन ने असंतुष्ट पूर्ण चेहरा बनाकर कहा–"तुम लोगों ने मकान तो दे दिया। मगर घर चलाने के लिए क्या रुपयों की जरूरत नहीं है? इधर चीजों के दाम तो आसमान को छू रहे हैं।" यों कहकर पिशाचिनियों से थोड़ा धन और वसूल किया।

इसके बाद जनार्दन उस नये मकान में जा बसा, तब उसने सोचा कि पत्नी हो तो खाना बना कर खिला सकती है।

दूसरे दिन से वह दुलहिन की खोज करने लगा। जनार्दन को राधा नामक एक लड़की बड़ी पसंद आई। उस लड़की को उसने एक बार किसी मंदिर के पास देख लिया था। उस वक्त उस लड़की ने खीझकर कहा था–"ऐसे आलसी लोगों को भीख नहीं देना चाहिए।" यों कहकर वह अपनी बगल में खड़ी बूढ़ी के हाथ छुट्टे पैसे देकर चली गई थी।

इस वक्त जनार्दन का भेष बदल गया था, इसलिए राधा उसे पहचान न पाई। पर उसके पिता ने जनार्दन के मकान और उसकी संपत्ति को देख उसके साथ अपनी बेटी की शादी की।

शादी के बाद जनार्दन दावत और मनोरंजन के कार्यक्रमों में फंसा रहा, इसलिए उसे अमावस्या के दिन की याद न रही। एक दिन आधी रात को किवाड़

पर दस्तक होते देख जनार्दन ने खीझते जाकर किवाड़ खोले तो देखता क्या है, दोनों पिशाचिनियां सामने खड़ी हुई हैं। उन्हें देख वह चौंक पड़ा।

जनार्दन तुरंत यह सोचकर कि कहीं उसकी पत्नी उन पिशाचिनियों को देख डर न जाय, वह डांटकर बोला–"तुम लोगों में थोड़ी भी अक्ल नहीं है! कहीं सीधे घर आ जाती हो! चलो! चलो!" यों कहते वह उन पिशाचिनियों को दूर ले गया।

"क्या तुमने सोच लिया है? मैं गोरी हूँ न?" गोरी पिशाचिनी पूछ बैठी।

मैं काली रंग की होने पर भी बड़ी सुंदर लगती हूँ न?" काली ने पूछा।

जनार्दन ने अपना गला संवारते हुए कहा–"तुम लोगों की बेवकूफी को क्या बताऊँ? काले और गोरे रंगों में कुछ नहीं धरा है। जो कुछ है, सब पैसे में है। उसके रहने से सारी त्रुटियाँ ढक जाती हैं। जब मेरे पास संपत्ति न थी, उस वक़्त जो लड़की मुझसे खीझ रही थी, उसीने मेरे पास संपत्ति पाकर खुशी से मेरे साथ शादी कर ली है। इसलिए यह बात सच है कि खूबसूरत और बदसूरत, अच्छा-बुरा-ये सब धन के साथ जुड़े होते हैं। इस बात को छोड़ दो, मैंने अभी-अभी शादी कर ली है। कई खर्च आ पड़े हैं। मुझे इस वक़्त धन चाहिए।"

जनार्दन की बातें सुनने पर पिशाचिनियों के चेहरे सफ़ेद पड़ गये, तब वे बोलीं–"तुम सच कहते हो। तुमने आज हमारी आँखें खोल दीं। हमारे पास जो कुछ धन था, उसमें से बहुत बड़ा हिस्सा हमने तुमको ही दे दिया है। अब हम अपना धन वापस ले जायेंगी।" यों कहते दोनों पिशाचिनियाँ गायब हो गईं। इसके दूसरे ही क्षण वहाँ पर न मकान था और न धन ही।

इस पर राधा ने चकित होकर जनार्दन से पूछा–"अजी, बताइये तो! क्या हुआ है? यह कैसी अजीब बात है?"

जनार्दन ने तब यह निर्णय कर लिया कि चाहे आज तक उसने अपने दिन जैसे भी बिताये हो, अब मेहनत करके अपने परिवार को चलाना होगा। इसके बाद जनार्दन ने सारा वृत्तांत अपनी पत्नी को सुनाया और सर झुका कर बोला–"राधा मुझको माफ़ कर दो।"

"अजी, बिना मेहनत का धन सत्तू की तरह उड़ जाता है। उस दिन मंदिर के पास में तुम पर खीझ नहीं उठी थी, तुम्हारे भीतर के आलसीपन को! अब भी सही, अगर तुम अपने पैरों पर खड़े हो सके तो मैं पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा तुम्हारा आदर करूँगी।" राधा ने अपने मन की बात बताई।

ज्ञान योगी

एक महर्षि मृत्यु शय्या पर अपनी अंतिम सांसें गिन रहे थे। उनका अंतिम संदेशा पाने के लिए सभी शिष्य चारों ओर घिरे हुए थे।

महर्षि की सांसें फूल रही थीं।

एक शिष्य ने महर्षि से पूछा—"गुरुदेव, अब आप की तबीयत कैसी है ?"

"बेटा, मुझे बड़ा भारी मालूम होता है !" महर्षि ने जवाब दिया।

इस पर वे सारे शिष्य आश्चर्य में आ गये। उन शिष्यों ने अनेक बार देखा था कि महर्षि सुख-दुखों को समान रूप से स्वीकार करते हैं; इसलिए दूसरे शिष्य ने पूछा—"ऐसा क्यों गुरुदेव ?"

"पगले, जिस शरीर को चार आदमी ढोते हैं, उसे मैं अकेले अभी तक ढो रहा हूं। क्या वह मेरे लिए भारी नहीं है ?" ये शब्द कहते महर्षि ने हँसते हुए सदा के लिए अपनी आँखें मूंद लीं।
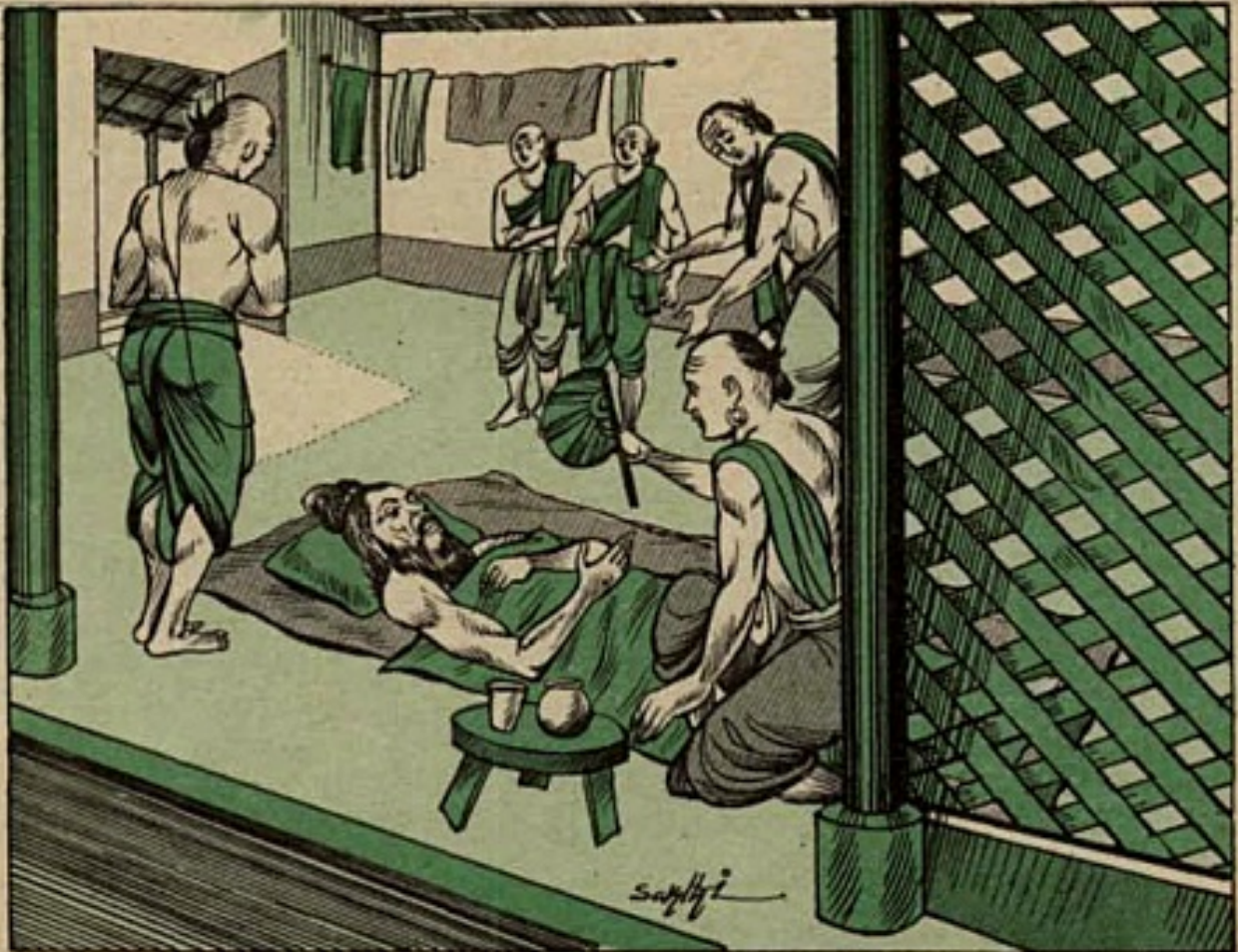
सही निर्णय

गोपाल के माँ-बाप उसके बचपन में ही गुजर गये थे। इस पर उसके मामा जगन्नाथ ने गोपाल को पाल-पोस कर बड़ा किया और पढ़ाया। इसके बाद बड़ी दौड़-धूप करके राजधानी नगर में एक अच्छी नौकरी दिलायी। थोड़े दिन बाद एक सुन्दर कन्या के साथ उसकी शादी भी कराई। इस तरह जगन्नाथ ने अपनी जिम्मेदारी निभाई।

गोपाल की गृहस्थी कुछ दिन शांति पूर्वक चली। इसके बाद पति-पत्नी के बीच झगड़े शुरू हो गये। यह समाचार मिलने पर जगन्नाथ को बड़ा दुख हुआ। क्योंकि यह रिश्ता उसीने क़ायम किया था। दर असल उनके बीच मनमुटाव क्यों हो रहे हैं, इसका पता लगाने के ख्याल से जगन्नाथ एक दिन स्वयं गोपाल के घर पहुँचा।

जगन्नाथ ने गोपाल के घर पहुँचते ही कई नये लोगों को देखा। गोपाल और उसकी पत्नी ने बड़े आदर के साथ उसका स्वागत किया।

जगन्नाथ ने गोपाल को अलग ले जाकर पूछा—"गोपाल, ये सब लोग कौन हैं?"

"मामाजी, ये सब हमारे ही रिश्तेदार हैं। कहते हैं कि रिश्ते में हमारे बहुत ही निकट के लोग हैं। यह तो राजधानी नगर है न? कई कामों से यहाँ पर आते हैं और अपना काम पूरा करके लौट जाते हैं।" गोपाल ने जवाब दिया।

जगन्नाथ सर हिला कर उस वक़्त चुप रह गया। इसके बाद नये लोगों ने एक-एक करके जगन्नाथ से मिल कर अपनी रिश्तेदारी की सात पीढ़ियों का परिचय दिया। तब जगन्नाथ की समझ में आया कि ये सब लोग रिश्तेदारी के नक़ाब में

सुरेश गुप्त

कुठले के नीचे के चूहों की भांति उसके भानजे के घर पहुँचे कर उसे लूट रहे हैं।

दूसरे दिन जब गोपाल दफ़्तर चला गया तब जगन्नाथ ने गोपाल की पत्नी विशालाक्षी को बुलाकर पूछा–"बेटी, गृहस्थी कैसे चल रही है? क्या हाल-चाल है?"

विशालाक्षी ने चिंतापूर्ण चेहरा बनाकर कहा–"काकाजी, क्या बताऊँ? रोज कोई न कोई रिश्तेदार आ धमकते हैं। इन्हें खाना बनाकर खिलाने में मेरी कमर टूटती जा रही है। एक महीने भर के खर्च के लिए हमने जो सामान खरीदे, वे दस दिनों में ही पूरे हो गये हैं; फिर खरीद लाने को बताती हूँ तो वे मुझ पर टूट पड़ते हैं! आप ही बताइये, मैं क्या कर सकती हूँ?"

तब जाकर जगन्नाथ की समझ में आ गया कि पति-पत्नी के बीच झगड़े का असली कारण क्या है? उस दिन रात को गोपाल को अकेले पाकर जगन्नाथ ने उसकी गृहस्थी के बारे में पूछा।

इसपर गोपाल आवेश में आकर बोला–"ममाजी, आपने मेरे गले में एक फंदा डाल दिया है। मेरा दम घुटता जा रहा है। विशालाक्षी आपकी समझ के मुताबिक़ होशियार और मिलनसार नहीं है। वह तो एकदम झगड़ालू औरत है!"

"ओह, ऐसी बात है? लेकिन क्या हुआ बेटा? साफ़-साफ़ बतला दो न?" जगन्नाथ ने पूछा।

"वह हर छोटी सी बात को लेकर मुझ से झगड़ा करती है। घर चलाने के लिए महीने भर के वास्ते में जो सामान खरीद लाता हूँ, उसे एक ही हफ़्ते में खर्च करके फिर लाने को कहती है। कारण पूछने पर झगड़ा करने पर तुल जाती है! मामाजी, आप ही बताइये कि क्या मैं कोई लखपति हूँ? मुझे जो तनख्वाह मिलती है, उसी में सारा खर्च संभाल लेना चाहिए न?" गोपाल ने अपना सारा क्रोध निगलते हुए जवाब दिया।

जगन्नाथ इसके जवाब में सिर्फ़ सर हिला कर चुप रह गया। लगातार रिश्तेदार और रिश्तेदारों के रिश्तेदार आकर किसी परिवार पर टूट पड़ते हैं, तो उस परिवार का खर्चा बढ़ ही जाता है! दर असल गोपाल की नौकरी मामूली नहीं है। उसे जो तनख्वाह मिलती है, उससे वे पति-पत्नी महीने भर आराम से खा-पी सकते हैं, थोड़ा-बहुत बचा भी सकते हैं।

पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव बढ़ते देख जगन्नाथ को बड़ा दुख हुआ। घर में हमेशा रिश्तेदारों का जमघट लगे रहने के कारण उन्हें दिल खोलकर आपस में बातें करने का मौक़ा बिलकुल नहीं मिल रहा है। आपस में एक दूसरे की तक़लीफ़ को सुनाने का अवसर न मिलने की वजह से वे मानसिक दृष्टि से एक दूसरे से दूर होते जा रहे हैं और उनके बीच कलह का कारण बनता जा रहा है।

इसके बाद जगन्नाथ राजधानी में दो दिन और रुका। अपने जान-पहचान वालों की सिफ़ारिश करा कर गोपाल को राजधानी से दूर तबादला करवाया।

शुरू-शुरू में गोपाल यह सोच कर दुखी हुआ कि उस नयी जगह में राजधानी की जैसी सुविधाएँ नहीं हैं, लेकिन रिश्तेदारों का आना बंद सा हो नया। इस बीच पति-पत्नी के बीच प्यार बढ़ता गया।

जगन्नाथ को जब मालूम हुआ कि उसका भानजा अपनी पत्नी की हर इच्छा की पूर्ति कर रहा है और वे परस्पर प्यार करते हैं, तब जगन्नाथ तृप्ति के साथ हँस पड़ा।

सिक्कों की गठरी

ब्रह्मदत्त जिन दिनों में काशी पर राज्य करते थे, उस समय बोधिसत्व ने एक धनी किसान के घर जन्म लिया। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया, त्यों-त्यों वह परिवार भी संपन्न होता गया। बोधिसत्व के एक छोटा भाई भी था।

थोड़े दिन बाद धनी किसान का देहांत हो गया। उसके परिवार से संबंधित एक गाँव में कर वसूली के लिए दोनों भाई चल पड़े। वहाँ पर किसानों से उन्हें प्राप्त होनेवाले अनाज के साथ एक हजार सिक्कों की नक़द भी मिली। उस धन को लेकर दोनों भाई काशी नगर के लिए चल पड़े। रास्ते में उन्हें एक नदी पार करना पड़ा। नाविक के लौटने में देरी थी। इसलिए दोनों भाइयों ने अपने साथ लाये खाद्य पदार्थों की गठरी खोल कर भोजन किया और पानी पी लिया।

बोधिसत्व ने अपनी आदत के मुताबिक़ अपने हिस्से का थोड़ा पदार्थ बचाकर उसें नदी में फेंक दिया।

उस पदार्थ को नदी में निवास करने वाले एक जलभूत ने पकड़ लिया। उस पदार्थ के खाने पर उसे एक दिव्य शक्ति प्राप्त हो गई। जिसके द्वारा जलभूत ने यह समझ लिया कि उस पदार्थ को फेंकने वाला व्यक्ति कौन है।

बोधिसत्व की जब भूख मिट गई तब उसने अपना एक वस्त्र नदी के किनारे बालू पर बिछाया और उस पर लेट गया। पर बोधिसत्व का छोटा भाई ईर्ष्यालु था। उसके मन में यह दुर्बुद्धि पैदा हुई कि उसके भाई के हिस्से को भी हड़प ले। इस विचार के आते ही उसने सिक्कोंवाली गठरी जैसी एक और गठरी तैयार की और उसमें कंकड़ डाल दिये। उन दोनों गठरियों को

अपने भाई की आंख बचा कर अपनी पोशाकों में छिपा लिया।

इसके थोड़ी देर बाद नाविक आ पहुँचा। इस बीच बोधिसत्व भी नींद से जाग उठे। दोनों भाई नाव पर सवार हुए। नाव नदी की मंझधार में आ गई। अपनी युक्ति के अनुसार छोटे भाई ने कंकड़ों से भरी गठरी को नदी में खिसका दिया। उसका यह काम कपटपूर्ण था। इसलिए एक गठरी को नदी में खिसकाते वक़्त उसके हाथ कांप उठे। वह चिल्ला उठा–"भैयाजी! सिक्कों की गठरी नदी में गिर गई।"

इस पर बोधिसत्व ने कहा–"मेरे छोटे भाई! वह संपत्ति हमारी न थी, इसलिए वह नदी में गिर गई। उसके वास्ते चिंता करना बेवकूफ़ी ही होगी।"

इसके बाद बोधिसत्व के द्वारा फेंके गये खाद्य पदार्थ को खानेवाले जलभूत ने अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा यह जान लिया कि नदी में सिक्कों की गठरी गिर गई है। साथ ही उसने बोधिसत्व के छोटे भाई के कपट को भी समझ लिया। उस भूत ने एक बड़ी मछली को प्रोत्साहित करके उस सिक्कोंवाली गठरी को निगलने दिया। इसके बाद वह भूत उस मछली पर ऐसी निगरानी रखने लगा जिससे वह मछली उसकी आंख बचाकर कहीं भागने न पाये।

थोड़े दिन बाद बोधिसत्व और उसका छोटा भाई काशी नगर को लौट आये।

घर लौटते ही छोटे भाई ने दूसरी गठरी को खोल कर देखा। उसमें कंकड़ भरे थे; अपनी भूल पर पछताते हुए चिंता के मारे छोटे भीई ने खाट पकड़ ली।

एक दिन मछुओं ने नदी में जाल फेंके। जलभूत ने अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा ऐसा उपाय किया जिससे सिक्कों की गठरी को निगलने वाली मछली उस जाल में फँस जाये। मछुए उस मछली को बाजार में बेचने ले गये। जिन लोगों ने मछली को खरीदने के ख्याल से उसका दाम पूछा, उन लोगों से वे कहने लगे–"इस मछली का दाम एक हज़ार एक सिक्का है!"

इस पर सब लोग यह सोच कर हंसने लगे कि इन मछुओं के दिमाग खराब हो गये हैं! इसके बाद मछुए उस मछली को बोधिसत्व के घर ले गये और उसे बोधिसत्व के हाथ बेचना चाहा।

बोधिसत्व ने पूछा–"बताओ, इस मछली का दाम क्या है?"

"आपके लिए हो तो एक ही सिक्का है!" मछुओं ने जवाब दिया।

"दूसरों के हाथ इसे कितने सिक्कों में बेचना चाहते हो? तुम्हारी बातों में कोई रहस्य छिपा हुआ है!" बोधिसत्व ने पूछा।

"दूसरे लोगों से हम एक हज़ार एक सिक्का लेंगे!" मछुओं ने साफ़ जवाब दिया।

बोधिसत्व ने आश्चर्य में आकर उसे एक सिक्के में खरीद लिया। इसके बाद

बोधिसत्व और उसकी पत्नी ने मिलकर जब उस मछली को काटा, तब उसके पेट में से एक हज़ार सिक्कोंवाली गठरी निकल आई। बोधिसत्व ने पहचान लिया था कि वह गठरी उसी की है।

बोधिसत्व ने अपनी पत्नी को समझाया– "यह गठरी तो हमारी ही है!" इन शब्दों के साथ उसने अपनी पत्नी को सारी कहानी सुनाई।

तब बोला–"ये मछुए तो दिव्य ज्ञान रखने वाले मालूम होते हैं। उन लोगों ने यह बात समझ ली है कि मछली के पेट में रहनेवाली सिक्कों की गठरी मेरी ही है! इसीलिए उन लोगों ने कहा था कि दूसरों के लिए तो इस मछली को वे एक हज़ार एक सिक्कों में बेचना चाहते थे और मेरे लिए तो वे एक ही सिक्के में! वे एक सिक्का जो ज़्यादा लेना चाहते थे, वह उनकी मजूरी है।"

इसके बाद बोधिसत्व अचरज में आकर यह सोचने लगा कि इन मछुओं को ऐसा दिव्य ज्ञान कैसे प्राप्त हो गया है! तभी उसे यह दिव्य वाणी सुनाई दी:

"महानुभाव! मैं नदी में निवास करने वाला एक जलभूत हूँ! एक दिन आपने नदी में जो खाद्य पदार्थ फेंका था, उसे खाकर मैंने दिव्य शक्ति प्राप्त की है। पानी में गिरनेवाली सिक्कों की गठरी को मैंने ही एक मछली के द्वारा निगलने दिया और मछुओं को भी प्रोत्साहित कर मैंने ही उन्हें आप के पास भेज दिया था। इस तरह से मैं आप के ऋण को चुका पाया। लेकिन आप अपने दुष्ट भाई को इस संपत्ति में से कोई हिस्सा न दीजिए।"

जलभूत ने जो उपकार किया और उसने जैसा अच्छा कार्य किया, इस पर बोधिसत्व बहुत प्रसन्न हुआ। लेकिन उसने अपने छोटे भाई के मामले में उसकी सलाह का पालन नहीं किया। भ्रातृ न्याय के अनुसार बोधिसत्व ने अपने छोटे भाई को पांच सौ सिक्के दिये और इस तरह अपने भ्रातृ प्रेम को प्रकट किया।

कनिष्क

दो हज़ार वर्ष पूर्व भारत की पश्चिमोत्तर सीमा के प्रदेशों पर खानाबदोश जातियों ने कई बार हमला किया। उन जातियों ने कहीं भी अपना स्थिर निवास नहीं बनाया, इस वजह से उन प्रदेशों के राजा उन जातियों को रोक न पाये।

कालांतर में उन खानाबदोश जातियों ने अपना स्थिर निवास बनाया। इसके बाद वे जातियाँ भी खेतीबाड़ी, व्यापार और वाणिज्य जैसे कार्य-कलाप करने लगीं।

काल-क्रम में उन जातियों के नेताओं में से कुछ लोग शक्तिशाली बने। उनमें से कड्फावीस नामक व्यक्ति ने पुरुषपुर नाम से – आज का पेशावर – एक नगर का निर्माण किया और इस तरह एक राज वंश का मूल पुरुष बना। उस वंश के तीसरे राजा कनिष्क ने पुरुषपुर को एक मजबूत नगर बना कर कई राज्यों को जीत लिया।

ई. सन्- ७८ में कनिष्क ने एक नया पंचांग तैयार कराया, उसी को हम शक संवत्सर नाम से पुकारते हैं । एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करने के ख़्याल से कनिष्क ने भारी सेना के साथ चीन, तुर्किस्थान, यारखण्ड और काश्गर नगरों पर हमला किया और अड़ोस-पड़ोस के कई राजाओं को जीत कर उन्हें अपने सामंत बनाये ।

इसके थोड़े दिन बाद कनिष्क साधु प्रकृति के एक महान शासक के रूप में बदल गया । उसने काश्मीर के कुंडल वनविहार नामक स्थान पर एक महान बौद्ध पंडित-परिषद् का समावेश किया । उस सम्मेलन के निर्णयों को ताम्र पत्रों पर खुदवा कर भावी पीढ़ियों के वास्ते सुरक्षित रखा गया ।

कनिष्क के दरबार में बड़े-बड़े पंडित और कवि भी थे । महाकवि अश्व घोष, दार्शनिक नागार्जुन, वैद्याचार्य चरक आदि उसी के दरबार में रहें । उसके शासन काल में ललित कलाओं का खूब विकास हुआ । खासकर गांधार शिल्पकला चरमसीमा को प्राप्त हुई ।

कहा जाता है कि महाकवि अश्वघोष एकांत में जब मानसिक उद्वेग पैदा करनेवाली अपनी कविता का पाठ करते, तब अश्वों की आँखों से आँसू बह निकलते थे। यही कारण है कि उनका नाम अश्वघोष सार्थक हो गया है। उन्होंने 'बुद्ध चरित' नामक एक ग्रंथ रचा है।

महान दार्शनिक नागार्जुन के आर्य देव नामक एक प्रतिभाशाली शिष्य था। जब उन दोनों की पहली मुलाक़ात हुई उस वक्त नागार्जुन के हाथों में एक जल से भरा पात्र था। आर्य देव ने अपने हाथ की सुई को उस जल में खिसका दिया, इस प्रकार आर्य देव ने ज्ञान की गहराइयों को जानने की इच्छा प्रकट की।

पुराण युग में आत्रेय नामक ऋषि ने अपने शिष्य अग्निवेश को व्याधि के मूल कारण और उसे रोकने के उपाय बताये। उन गुरु और शिष्यों का वार्तालाप ही 'अग्निवेष संहिता' है। उस ग्रंथ का अधिकांश भाग अब नष्ट हो चुका है।

कनिष्क के आश्रय में चरक ने वैद्य शास्त्र संबंधी कई अनुसंधान किये। उन अनुसंधानों का परिणाम ही 'चरक संहिता' है। औषधियों के मूल तत्वों को जानने के लिए चरक ने अपना बहुत ज्यादा समय हिमालियों में बिताया था।

कनिष्क के शासन काल में कुशान जातियाँ भारत की अन्य जातियों में पूर्ण रूप से मिल गई। इसी कारण से बहुत समय तक इसके बाद पश्चिमोत्तर दिशा से भारत पर दूसरी कोई असभ्य जातियाँ हमला न कर पाई।
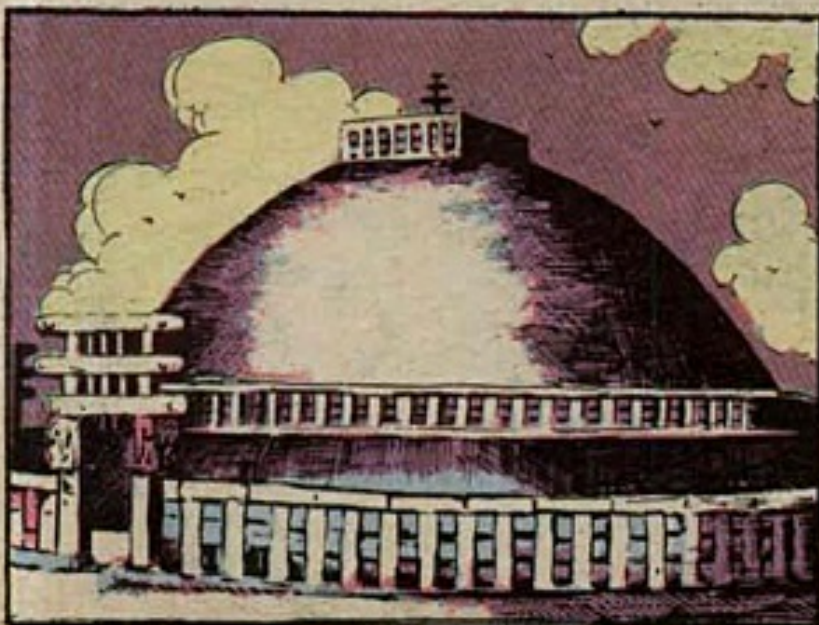
कनिष्क ने पुरुषपुर में एक बहुत बड़ा स्तूप बनाकर उसके अन्दर बुद्ध की अस्थियों को सुरक्षित रखवाया। उस समय के विदेशी यात्रियों के कथनानुसार उस स्तूप की ऊँचाई साठ फुट की है। आज पुरुषपुर (पेशावर) पाकिस्तान का एक प्रधान नगर है।

अनोखी सूझ

जानकी के गले का दस गिन्नियों वाला सोने का हार अचानक कुएँ में गिर पड़ा। वह कुआं सौ फुट गहरा था। उसमें उतरने वाले गोताख़ोर बहुत ही कम लोग थे। जानकी पानी भरने के लिए कुएँ में रस्सा डाल झांक कर देख रही थी कि बाल्टी डूब गई है या नहीं, तभी माला की जोड़ खुलने की वजह से कुएँ में गिर गया।

गोताखोरों को बुलवाकर सोने का हार कुएं से बाहर निकालने को कहा गया, पर हार की क़ीमत जानकर उन लोगों ने दस रुपये की मांग की।

इतने में लखन सिंह उधर से आ निकला। सब को पता है कि वह चोरियाँ करता है, पर वह कभी पकड़ा न गया। जानकी इस तरह ऊँची आवाज में बोली, जिससे वह सुन सके। ये बातें सुन कर भी लखन सिंह इस तरह चला गया, मानो उन बातों के साथ उसका कोई सरोकार न हो।

उस रात को लखन सिंह कुएं में उतरा, सोने का हार लेकर ज्यों ही वह बाहर आया त्यों ही घर के पीछे छिपे दस आदमियों ने उसे पकड़ कर कोत्वाल के हाथ सौंप दिया।

जानकी को अपना हार वापस मिल गया, साथ ही सब की आँख बचाकर भागनेवाले चोर को पकड़ाने में मदद देने की वजह से सबने जानकी का अभिनन्दन किया।

आज का कौआ

धातुपुर नामक एक गाँव में एक जामून का पेड़ था। उस पर बहुत दिनों से कई कौए निवास करते थे। जामून के पेड़ से थोड़ी दूर पर पानी का एक नल था। पेड़ पर निवास करनेवाले सभी कौए उस नल के नीचे गिरे जल में नहाते व उसका पानी भी पी लेते।

गरमी के दिन थे। एक छोटे कौए को प्यास लगी। वह कौआ नल के पास पहुँचा। उसके पास पानी की एक बूँद तक न थी। न मालूम क्यों पिछले दिन से नल में पानी न आ रहा था।

छोटा कौआ पानी के वास्ते सारे प्रदेश छान कर लौट आया और बूढ़े कौए से बोला–"दादा, मुझे बड़ी प्यास लगी है। पानी कहाँ पर मिलेगा? मैं आस-पास के सारे प्रदेशों को छानकर लौट रहा हूँ। कहीं पानी नहीं मिला।"

बूढ़ा कौआ थोड़ी देर सोचता रहा, तब बोला–"कहा जाता है कि पुराने जमाने में हमारी जाति के एक पुरखे को इसी तरह प्यास लगी। पानी की बड़ी खोज करने पर आखिर एक सुराही के नीचे उसे थोड़ा पानी दिखाई दिया। जब वह पानी उसकी चोंच के परे था, तब वह अपनी चोंच से एक-एक करके कई कंकड़ उठा-उठाकर ले आया और बराबर सुराही में डालता गया। जब पानी ऊपर आया, तब उसने अपनी प्यास बुझाई। इसी तरह हम लोग भी पानी खोज कर अपनी प्यास बुझा लेंगे।"

यों विचार कर वह बूढ़ा कौआ और छोटा कौआ पानी की खोज में चल पड़े। पर उन्हें कहीं पानी न मिला। एक जगह उन्हें एक बड़ी सुराही दिखाई दी जिसके तल में थोड़ा-सा पानी बचा हुआ था।

सरला शर्मा

क़िस्मत की बात थी कि नजदीक में ही कंकड़ों का एक ढेर था। वे दोनों उत्साह में आ गये। एक-एक कंकड़ उठा लाकर सुराही में डालने लगे, एक ओर जोर की प्यास लगी हुई थी और दूसरी ओर जोरदार गरमी पड़ रही थी, इस वजह से वे दोनों कौए जल्द ही थक गये। मगर सुराही का चौथा हिस्सा भी भरा नहीं। तब अपने पुरखे कौए की कहानी याद करके और थोड़ी देर तक चोंचों से कंकड़ लाकर सुराही में डालने लगे। उन्हें मालूम हुआ कि यह काम उनके द्वारा होनेवाला नहीं है।

"दादाजी, आपने कहा कि हमारे किसी पुरखे ने अकेले ही यह काम साध लिया है, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि हम दो प्राणी मिल कर भी यह काम क्यों नहीं कर पा रहे हैं? मुझे ऐसा लगता है कि आप ने मुझे धोखा दिया है!" छोटा कौआ थकावट का अनुभव करते हुए बोला।

"अबे, मैंने उस कार्य को थोड़े ही देखा है! हमारे गाँव के अध्यापक ने तुम्हें और मुझको भी दगा दिया है। वे रोज बच्चों को पीट-पीट कर यह कहानी सुनाते थे, इसलिए मैंने सोचा कि वह कहानी सच होगी।" बूढ़े कौए ने समझाया।

आखिर उन कौओं ने यह फ़ैसला किया कि दो कौए और आकर सुराही में कंकड़ डाल दे, फिर भी इस तरह पानी के ऊपर

आने में काफी देर लगेगी, तब तक प्यास के मारे उनकी जान निकल जाएगी। यह विचार कर दोनों कौए अपने निवास को लौट आये।

पाठशाला का अध्यापक उसी वक़्त खाना खाकर बरामदे में आया और आराम कुर्सी में लेट गया। पेड़ की डालों पर बैठे कौओं को अध्यापक के साथ उसके घर में पानी से भरे दो घड़े सामने दिखाई दिये। बूढ़ा कौआ छोटे कौए को समझा ही रहा था, तभी छोटा कौआ काँव-काँव करते उड़ गया और अध्यापक के बरामदे में जा बैठा।

"छीः छीः, यह कमबख्त कौआ घर में घुस आया है।" ये शब्द कहते अध्यापक की पत्नी झूठे बर्तन उठाकर पिछवाड़े में चली गई।

उस वक़्त छोटे कौए के दिमाग में कोई बात सूझ पड़ी। वह उस औरत के पीछे चला गया। एक चम्मच को अपनी चोंच में दबाये फुर्र से उड़ गया और सामने के मकान की छत पर जा बैठा।

"ओह! कौआ तो चम्मच उठा ले गया है!" यों चिल्लाते अध्यापक की पत्नी कौए के पीछे दौड़ पड़ी।

आरामकुर्सी में झपकियाँ लेनेवाला अध्यापक चौंक कर उठ खड़ा हुआ और वह भी कौए के पीछे दौड़ पड़ा।

छोटा कौआ चम्मच को छत पर ही छोड़कर बूढ़े कौए के साथ अध्यापक के घर में घुस पड़ा। दोनों ने एक-एक घड़े पर बैठ कर जी भर कर पानी पिया।

अध्यापक पड़ोसी घर से सीढ़ी माँग कर लाया, छत पर जाकर चम्मच लिये नीचे उतर आया। तब उसके घर में अपनी प्यास बुझानेवाले दोनों कौए उसे दिखाई दिये।

उस दिन से अध्यापक ने बच्चों को वह पुरानी कहानी सुनाना छोड़ कर यह नयी कहानी कहना शुरू किया।

बूढ़ा कौआ मन ही मन गुनगुनाने लगा— "उफ़! आज के बच्चों में जो अक़्ल है, वह तो हम में नहीं है।"

आदर्श

श्रीपति हमेशा आदर्श की बातें करता, पर उन्हें कभी अमल में नहीं लाता था। इसके उदाहरण के रूप में वह हर बात में यही कहता कि दहेज़ लेना महान अपराध है, मगर जब उसकी शादी का प्रस्ताव आया, तब वह अपने माता-पिता से साफ़ कह देता–"कम से कम पचास हज़ार रुपये दहेज न दे सकनेवाले रिश्तों की बात मेरे सामने न उठावे !"

एक बार श्रीपति के मित्र रामेश्वर ने उससे पूछा–"दोस्त ! तुम कहते हो कि दहेज़ लेकर शादी करना अपराध है, पर तुम शादी क्यों नहीं करते ? जो वर दहेज़ नहीं लेता, उसके साथ अपनी कन्या ब्याहने के लिए हज़ारों लोग तैयार जो बैठे हैं ?"

"ऐसे रिश्तों की कमी क्या है ? लेकिन मुझे तो लड़की भी पसंद आनी चाहिए न ? सचमुच अगर सुंदर कन्या मिल जाये तो मैं जरूर उसके साथ शादी करूँगा !" श्रीपति ने जवाब दिया।

एक बार वे दोनों मित्र हाट में गये। लौटते वक्त वे एक सराय में पहुँचे। सामने एक टीले पर एक कन्या बैठी हुई थी। वह बड़ी सुंदर थी। उसकी ओर श्रीपति एकटक देखता रहा। इसे भांप कर रामेश्वर ने पूछा–"वह कन्या सुंदर लग रही है न ?"

"वाह, उसका सौंदर्य अद्भुत है ! न मालूम वह लड़की कौन है ?" श्रीपति ने कहा।

"वह और कोई नहीं, मेरी छोटी बहन गिरिजा है। तुम्हें वह पसंद आ गई है। इसलिए मान सकते हैं कि बिना दहेज के ही उसकी शादी हो जाएगी। हम लोग यह सोचते परेशान थे कि दहेज़ देकर उसकी शादी कैसे कर सकते हैं ?" रामेश्वर ने बताया।

इसके बाद लाचार होकर श्रीपति को गिरिजा के साथ विवाह करना पड़ा।

बड़ा कौन है?

रुद्रपुर के जमीन्दार नारायण सिंह के मकान में हर इतवार दुपहर को तीन घंटों तक एक सभा हुआ करती थी। उस गोष्ठी में गाँव के सभी बुजुर्ग लोग भाग लिया करते थे।

एक दिन की गोष्ठी में जमीन्दार साहब ने वहाँ पर इकट्ठे हुए बुजुर्गों के सामने एक सवाल रखा–"हमारे समाज में वैद्य, न्यायाधिपति, पुलिस अधिकारी जैसे कई अधिकारी हैं न! उनमें बड़ा कौन है?"

"वैद्य तो लोगों के प्राणों की रक्षा करता है, बीमारियों को दूर करता है, इस लिए वैद्य ही सब से बड़ा है!" गाँव के मुखिये वीरवर्मा ने अपना विचार बताया।

पर गाँव के सबसे बड़े रैयत ने अपना विचार सुनाया–"न्याय का निर्णय करने वाले न्यायाधिपति पर धर्म और अधर्म निर्भर होते हैं। अगर न्यायपूर्वक फ़ैसला करना है तो उन्हें अपने रिश्तेदारों तथा मित्रों को भी दण्ड देना पड़ता है। इसलिए सबसे बड़ा अधिकारी न्यायाधिपति हैं।"

इस पर गाँव के बड़े धनी वसंत गुप्त ने कहा–"हमारे समाज में सब लोगों के साथ हिल-मिल कर रहते हुए धोखे, दगे, अत्याचार, चोरियाँ व हत्याएँ करनेवाले दुष्टों को बड़ी कुशलता के साथ पकड़नेवाले पुलिस अफ़सर ही सबसे बड़े हैं।"

उस वक़्त इन लोगों से दूर कहीं खड़े होकर सबकी बातें सुननेवाला जमींदार का नौकर रघू धीरे से खांस कर बोला–"महानुभावों, आप सब जिन लोगों के नाम ले रहे हैं, उन सबसे हमारे गाँव के बूढ़े पंडित दीनदयाल कहीं ज़्यादा महान व्यक्ति हैं।"

इस पर सब लोग उसकी ओर नज़र दौड़ाकर हंस पड़े। तब जमींदार ने उससे

रघुनाथ सिंह

पूछा–"अरे रघू! जब हमारे गाँव के बुजुर्ग इतने बड़े-बड़े अधिकारियों को बड़े बता रहे हैं, तब इन सब को छोड़कर क्या हमारे बूढ़े पंडित दीन दयाल ही तुम्हारी दृष्टि में पड़ गये?"

ये बातें सुन पहले रघु चकित रह गया, फिर संभल कर बोला–"मालिक, कोई वाद-विवाद करने के लिए मैं ये बातें नहीं कह रहा हूँ। मैं रोज छोटे मालिक को पंडित के घर छोड़ आने के लिए जाया करता हूँ। उस वक़्त मैं उनके पढ़ाने के तरीक़े को देखा करता हूँ। वे हर एक बालक के दिल को जान कर उनकी बुद्धि के विकास के लिए प्रत्येक के दिमाग के स्तर के अनुकूल दवा जैसी बातें समझाया करते हैं।"

पुलिस के अधिकारी अपराध करनेवाले चोर और दुष्टों को पकड़ने का प्रयत्न करते हैं, मगर हमारे पंडित दीन दयाल पहले ही उन्हें सही मार्ग पर चलाते हैं; उनके द्वारा अपराध होने ही नहीं देते!

न्याय-निर्णय की बात भी कुछ ऐसी ही है! अपने पास पढ़ाने के लिए आनेवाले बच्चों में वे अमीर व गरीब का फ़र्क़ नहीं देखते! अगर बच्चे झगड़ा करते हैं तो उसी वक़्त असली बात का पता लगा कर गलती करनेवालों को उचित रूप में डांटते हैं। इस प्रक़ार वैद्य, पुलिस अफ़सर और न्यायाधिपति का काम वे अकेले ही करते हैं, और भविष्य में ऐसे ऊँचे पदों के लिए लायक़ अधिकारियों को भी वे ही तैयार करते हैं।"

रघु की बातों की सचाई को जमींदार के साथ बाकी लोगों ने भी समझ लिया और उसकी बुद्धि कुशलता की तारीफ़ की। उस दिन गाँव के लोग इस बात पर विचार कर रहे थे कि नये वर्ष के संदर्भ में किस महान व्यक्ति का सम्मान करें? यह समस्या भी अपने आप हल हो गई। उस नव वर्ष के दिन बड़े उत्सव का प्रबंध करके सबने मिलकर भारी पैमाने पर पंडित दीनदयाल का सम्मान किया।

[३]

गधे के मालिक युवक ने दिलैला को पहचान लिया, फिर भी वह विचलित न हुई। उसने पूछा–"बेटा, तुम क्या कहते हो? मेरी समझ में नहीं आता।"

"मुझे अपना गधा सौंपकर तब बात करो।" युवक ने जवाब दिया।

"चिल्लाते क्यों हो? क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे गधे को उठा ले गयी हूँ? मैंने उसे नाई मसूद के हाथ सौंप रखा है। तुम मेरे साथ चलो, तुम्हें तुम्हारा गधा वापस दिला देती हूँ।" दिलैला ने कहा। इस पर वह युवक दिलैला के पीछे चल पड़ा। दूकान पर पहुँचने के बाद दिलैला उसे बाहर खड़ा करके भीतर चली गई। आँखों में आँसू भरकर मसूद से बोली–"बेटा, मेरी समस्या का हल तुम्हीं कर सकते हो।"

"बात क्या है, काकी?" मसूद ने पूछा।

"देखो, बेटा! बाहर जो खड़ा है, वह जवान मेरा लड़का है। वह बीमारी में फंसकर मरते-मरते बच गया। मगर उसका दिमाग खराब हो गया है। बचपन में उसके पास एक गधा था। अब वह बराबर उसकी याद करके रोता है। उसके पागलपन को तुम्हीं दूर कर सकते हो।" दिलैला ने समझाया।

दिलैला के हाथ से दीनार लेते हुए मसूद बोला–"काकी, यह कौन बड़ी बात है? नीबू के रस से उसका सर मालिश कर दूं तो तीन जून में उसका पागलपन दूर हो जाएगा।"

"बेटा, उसे मीठी बातों से समझा-बुझा कर उसका इलाज करो। मैं तुम्हारा ऋण चुका दूंगी।" दिलैला ने लोभ दिखाया।

इस पर मसूद ने दूकान के बाहर आकर युवक से कहा–"सुनो भाई, तुम्हारा गधा मेरे पास है। वह जाएगा ही कहाँ? पल भर के लिए अन्दर आ जाओ।"

युवक ज्यों ही बरामदे के अन्दर आया, त्यों ही मसूद के नौकरों ने उसे पकड़कर ज़बर्दस्ती रस्सियों से बांध दिया। इस पर मसूद ने उसका सर मूंडकर नींबू रस का मर्दन किया। वह युवक जोर-शोर से चिल्लाने लगा।

मसूद ने उस युवक का इलाज पूरा करके भीतर जाकर देखा, बूढ़ी गायब थी। साथ ही उसके उस्तरे, आईने कैंचियाँ, तेल, इत्र, मेज, कुसियाँ आदि सारी चीज़ें गायब थीं। मसूद ने युवक के पास जाकर उसका गला दबाते हुए पूछा–"अरे कमबख्त! तुम्हारी माँ कहाँ है?"

"मेरी माँ के मरे कई साल गुजर गये हैं। तुमने मेरा गधा लौटाने की बात कही, जल्दी दे दो।" युवक ने अपने सर पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया।

जब वे दोनों यों झगड़ रहे थे, तब दिलैला से धोखा खाये हुए सारे लोग अपने पूर्व निर्णय के अनुसार उस दूकान पर आ पहुँचे। सारी बातें सुनने के बाद सबने जान लिया कि बूढ़ी दगाबाजिन ने एक बार और उन्हें धोखा दिया है। इस पर वे सब नाई मसूद को भी साथ लेकर बूढ़ी की खोज में चल पड़े।

वे लोग कई गलियाँ छानकर जब एक जगह पहुँचे तब गधेवाले युवक को फिर से दिलैला दिखाई दी। उसने झट से छलांग मारकर बूढ़ी को पकड़ लिया और चिल्ला उठा–"लो, यही वह धूर्त बूढ़ी है। इस डाइन को अब भागने न दो।"

सब मिलकर दिलैला को खालिद के घर ले गये। वहाँ के सिपाहियों से बोले–"हम इसी वक़्त खालिद साहब से मिलना चाहते हैं।"

"खालिद साहब सो रहे हैं। उनके जागने तक आप लोग इंतजार कीजिए!"

यों कहकर सिपाहियों ने उन पाँच आदमियों को मकान के अहाते में एक जगह बिठा दिया और दिलैला को जनाने के एक हिस्से के कमरे में भेज दिया। दिलैला उस कमरे से होकर भीतर चली गई। कई कमरे पार करके खालिद की बीबी के कमरे में पहुँची, सलाम करके बोली-"बेटी, मेरे गुलामों को तुम्हारे खालिद ने बारह सौ दीनारों में खरीदने का सौदा किया है। अब मैं उन्हें सौंपने के लिए ले आई हूँ। न मालूम उनके जागने में कितना वक़्त लगेगा?"

खालिद की बीबी बोली-"यह बात तो मैं नहीं जानती, मगर कई दिन पहले वे मुझसे बोले थे कि वे गुलामों को खरीद लेना चाहते हैं। लेकिन तुम्हारे गुलाम कहाँ पर हैं?"

"वे सब बाहर हैं। खिड़की में से झांककर देखने से वे दिखाई देंगे। सब लोग देखने में भी खूबसूरत हैं।" दिलैला ने जवाब दिया।

बाहर खड़े हुए लोगों को खिड़की में से देखकर खालिद की बीबी खुश हो गई, तब दिलैला से बोली-"उनका दाम मैं ही दे देती, लेकिन मेरे हाथ में एक हजार दीनार ही हैं। मैं क्या करूँ?"

"एक हजार तो काफी है। दो सौ दीनार मैंने पहले ही ले लिया है।" दिलैला ने कहा। इसके बाद खालिद की बीबी से एक हज़ार दीनार लेकर सलाम करके बोली-"बेटी, तुमने मुझे देर तक बिठाये बिना ही मेरा काम तुरंत पूरा किया है। मुझे अपने गुलामों के चेहरे देखने से दुख होगा। अगर तुम बुरा न मानोगी तो मुझे पिछवाड़े की राह से भेज दो।"

खालिद के नींद से जागते ही उसकी तारीफ़ करते हुए खालिद की बीबी ने कहा-"आखिर आप ने बड़ा अच्छा सौदा किया है।" इन शब्दों के साथ उसने गुलामों की खबर सुनाई। सारी बातें सुन कर खालिद ने अचरज में आकर पूछा-

"गुलाम कैसे? मैंने किसी से गुलामों को लाने की बात नहीं बताई है।

"आप यह क्या कहते हैं? मैंने तो उस बूढ़ी के हाथ एक हज़ार दीनार दे दिये हैं! वह यहाँ पर अपने गुलामों को छोड़ गई हैं। वे सब नीचे हैं।" खालिद की बीबी ने कहा।

खालिद जल्दी-जल्दी नीचे उतर आया। उसके इंतजार में बैठे दूकानदार, रंगसाज, जौहरी, नाई मसूद तथा गधेवाले युवक को देख अचरज में आ गया।

"क्या तुम्हीं लोग मेरे खरीदे गये गुलाम हो?" खालिद ने कहा।

"क्या हम गुलाम हैं? खलीफ़ा के पास चलिये।" सब ने धमकी दी।

उस वक़्त मुस्तफा भी वहाँ पर आ पहुँचा। इस बीच उसने जान लिया था कि बूढ़ी दिलैला ने उसकी पत्नी को भी धोखा दे दिया है। उसने खालिद से पूछा—"सुनो खालिद! तुम्हारे अधिकार के अंदर हर कोई बूढ़ी घरों में घुस कर भोली-भाली औरतों को दगा दे रही है। मेरी पत्नी के साथ जो दगा हुआ है, इसका तुम क्या जवाब देते हो?"

इसपर खालिद ने कहा—"जनाब! उस बूढ़ी को सजा देने की जिम्मेदारी मेरी है। आप सब को जो नुकसान पहुँचा है, उसे मैं भर दूँगा।

इस के बाद खालिद ने उन पांचों की ओर मुड़ कर पूछा—"तुम लोगों में से कौन उस बूढ़ी को पहचान सकते हो?"

पांचों ने एक स्वर में बताया—"हम सब उसको पहचान सकते हैं। यही नहीं, हमारे साथ अगर आप दस सिपाहियों को भेज देंगे तो हम उसकी खबर लेंगे।"

इसके बाद वे पांचों व्यक्ति सिपाहियों को साथ लेकर थोड़ी ही दूर गये थे कि दिलैला उनके सामने से आ गुज़री। तब उन्हें देख भागने को हुई, पर सबने उसका पीछा करके उसको पकड़ लिया। उसके हाथ बांध कर खालिद के पास ले गये।

खालिद ने दिलैला से चोरियों के बारे पूछा तो उसने जवाब दिया—"आप जो पूछते हैं। वह मेरी समझ में नहीं आता, मैं अपनी जिंदगी में चोरी का नाम तक नहीं जानती।"

तब तक शाम हो चुकी थी। उस दिन दिलैला की सुनवाई नहीं हो सकती थी। क्योंकि उसके अपराध अनेक थे, कई लोगों की गवाहियां भी लेनी थीं। साथ ही दिलैला आसानी से अपने अपराधों को स्वीकार करने की हालत में नहीं है। इसलिए खालिद ने सोचा कि उस रात को एक अंधेरी कोठी में दिलैला को बंद करे तो उत्तम होगा। मगर कारागार का अधिकारी दिलैला की जिम्मेदारी लेने को तैयार न हुआ। उसने कहा—"यह कोई उपाय करके कैद से भाग जाय तो मेरी जान पर आ पड़ेगी।"

इस पर खालिद ने कहा—"आप का कहना सही है, सुनवाई होने तक इस बुढ़ी को एक खुले मैदान में रख कर उसका पहरा बिठाना मुनासिब होगा।" इसके बाद खालिद घोड़े पर सवार होकर आगे चला। तब पांचों फरियादी दिलैला को घसीटते हुए उसके पीछे नगर के बाहर पहुंचे। वहां पर एक मैदान में एक कंभे से दिलैला को बंधवाकर पांचों को पहरे पर बिठाकर खालिद शहर में चला गया।

पांचों व्यक्ति दिलैला के चारों तरफ़ बैठ गये। उसे गालियां सुना-सुनाकर अपना गुस्सा उतार लिया। खाना खाने के बाद सबको जोर की नींद आ गई। क्योंकि वे लगातार तीन रात सो न पाये थे।

आधी रात के बीतने के बाद उधर से दो व्यक्ति आ गुजरे। दोनों की वहां पर मुलाक़ात हुई। एक शहर को छोड़ कर चला जा रहा था, दूसरा शहर में जानेवाला था। दोनों वहां पर रुककर बातचीत करने लगे। उनकी बातें दूर पर स्थित दिलैला को सुनाई दे रही थीं।

(और है)

तारकासुर नियंता बन कर शासन करने लगा। इसके साथ त्रिपुरासुर नामक तीन राक्षसों ने तपस्या करके कई वर पाये। आसमान में उड़ते हुए आसमान में चक्कर काटनेवाले तीन नगरों का निर्माण किया; तीनों नगरों पर उड़ते आग के गोले बरसाते हुए नगर और हरे-भरे गाँवों को जलाते उन्हें ध्वंस करने लगे। देवताओं को जब पता चला कि शिवजी अकेले ही उनका संहार कर सकते हैं, तब सब लोग मिलकर मंदिर के अहाते में प्रवेश करके उच्च स्वर में प्रार्थनाएँ करने लगे। पहले शिवजी यह सोच कर खीझ उठे कि विवाह के होते ही यह नई मुसीबत क्या आ पड़ी है? फिर त्रिपुरासुरों के अत्याचारों की बातें सुन क्रोध में आ गये और त्रिशूल धारण कर प्रमथ गणों को साथ ले त्रिपुरासुरों का अंत करने चल पड़े!

उसी समय जटावाले हाथी का रूप धर कर दुनिया को थर्राते हुए एक राक्षस राजा निकल पड़ा। हाथी की आकृति की वजह से उसका नाम गजासुर पड़ा। वह एक बड़ा शिव भक्त है। उसने यह वर पाया था कि शिवजी के हाथों में छोड़ किसी और के द्वारा उसकी मौत न होगी।

नारद ने गजासुर के हितेषी के रूप में उसे सलाह दी—"हे राक्षस राजा, तुम शिवजी को अपने भीतर छिपा रखोगे तो और ज्यादा अच्छा होगा न?" इस पर

गजासुर ने शिवजी की आराधना करके उन्हें प्रसन्न किया। इसपर गजासुर की इच्छा के अनुसार वे उसके हृदय में लिंग का रूप धर कर रह गये।

देवता यह सोचकर चिंतित हो उठे कि शिवजी गजासुर के हृदय में रह जायेंगे तो त्रिपुरासुर का संहार कैसे होगा। नव वधू पार्वती को सुख कैसे प्राप्त होगा? शिवजी तथा पार्वती के द्वारा पैदा होनेवाले व्यक्ति के द्वारा ही तो तारकासुर का अंत होना है? इस पर नारद ने उन्हें उपाय बताया– "शिवजी फूलनेवाले लिंग हैं न?" तब सारे देवता गजासुर के सामने शिवजी की प्रशंसा में स्तोत्र पाठ करने लगे।

गजासुर भी तन्मय होकर देवताओं के साथ शिवजी का भजन करने लगा। इस पर शिवलिंग फूलता गया, यों बढ़ते-बढ़ते उसने गजासुर को चीर डाला। इस कारण शिवजी बाहर आ गये। गजासुर ने सदा के लिए आँखें मूंदते हुए शिवजी की निंदा की–"भगवान, मैंने तुम पर विश्वास किया तो तुमने यह क्या किया?" इसके उत्तर में शिवजी ने कहा–"गजासुर, शिवभक्ति के उदाहरण के रूप में तुम्हारे नाम को शाश्वत करने के लिए हाथी के सिर को मैं अपने अधिक समीप में रख लूंगा। मैं सदा हाथी के चमड़े को धारण करूंगा।" यों समझाकर शिवजी ने गजासुर को अपने अंदर लेते हुए उसे कैवल्य प्रदान किया।

शिवजी ने पृथ्वी को रथ, सूर्य और चन्द्रमा को रथ चक्र, वेदों को घोड़े, ब्रह्मा को सारथी, मेरू पर्वत को धनुष तथा विष्णु को बाण बना लिया। तब अपने अनुचर नंदी, श्रृंगी, भृंगी आदि प्रमथ गणों को साथ लिया। तीन करोड़ देवता अपनी पत्नियों के साथ ले शिवजी के द्वारा त्रिपुरासुर पर विजय पाने के दृश्य को देखने उनके पीछे चल पड़े।

उधर एकांत में पार्वती को देख नारद ने प्रवेश करके कहा–"पार्वतीजी, शिवजी ने जब आपके साथ विवाह किया है, तब

से तारकासुर परेशान है और दुस्वप्न देख रहा है। इसलिए न मालूम वह तुम्हारी कैसी हानि कर बैठेगा? वज्रदंत उसकी मदद कर रहा है। वह बड़ा ही मायावी है, तुमको बहुत ही सावधान रहना होगा।"

इस पर पार्वती को चिंता भी होने लगी। उन्हें लगा कि तैल स्नान करने पर शायद मन की व्याकुलता दूर हो जाय। इसके बाद पार्वती ने उबटन लगाया, उबटन के ढेले से एक गुड़िया बनाया, उसकी ओर वात्सल्य पूर्वक देखा। गुड़िया की जगह उन्हें एक अत्यंत प्यारा बालक दिखाई दिया। पार्वती ने उस शिशु से पूछा—"बेटा, तुम कौन हो?"

"माँ, आपकी कांति को ज्यों की त्यों ग्रहण गर आप की देह से छूटे हुए उबटन का ढेला हूँ! मैं आपका पुत्र हूँ! मेरा नाम पुत्र गणपति है!" बालक ने जवाब दिया। इस पर पार्वती ने उस बालक को गोद में लेकर प्यार किया, चूम लिया। एक अंकुश तथा गदा दण्ड को उस बालक के हाथ देकर समझाया—"बेटा, घर के अन्दर किसी को आने न दो, एक कीड़ा भी भीतर घुसने न पावे!" यों कह कर प्रधान फाटक के पास बालक को पहरे पर बिठाया।

बालक ने पूछा—"माँ, मुझे खाने को कोई चीज दे दीजिए न?" उसी वक़्त पार्वती ने एक पक्वान्न और मोदक बना कर गणपति के हाथ दे दिया, तब वह नहाने चली गईं।

उधर तारकासुर ने सोचा कि पार्वती का अंत करने पर शिवजी के पुत्र होने की संभावना न रहेगी, और उसके प्राणों के लिए भी खतरा न होगा। यों सोचकर तारकासुर ने वज्रदंत को आदेश दिया कि वह पावतीजी का अपहरण करके ले आवे! वज्रदंत वज्रायुध को भी दांतों से चबा सकनेवाले तेज दाढ़ रखनेवाला एक ताक़तवर राक्षस है। वह चूहे के रूप में पहाड़ों में बिल बनाकर उन्हें चूर करके मूषिकासुर नाम से मशहूर हो गया है। उसने पार्वतीजी का अपहरण कर लाने के लिए

पहले अपने अनुचर कर्णि तथा गोकर्णि नामक दो राक्षसों को भेजा। वे दोनों भैंसे के जैसे मज़बूत युवकों कारूप धर कर प्रधान द्वार के पास अंकुश और गदादण्ड लेकर पहरा देनेवाले बालक के पास पहुँचे और उसे खेलने के लिए बुलाया।

बालक बोला—"अबे, पहले तुम लोग कुछ खा तो लो।" यों कह कर दो मिष्टान्न के ढेले उनके ऊपर फेंक दिया। ढेलों की चोटों से उनके सर चकरा गये और भागने लगे। इस पर दो मोदक दो चट्टानों की भांति उनके सामने गिर गये। इससे वे औंधे मुंह गिर गये। इस पर पुत्र गणपति ने उन्हें बुलाकर आदेश दिया—"अबे, तुम लोग अपने कान पकड़कर तीन बार उठा-बैठी करो, अपने आप चपत लगा कर तब यहाँ से चले जाओ।" इस पर उन राक्षसों ने वैसा ही किया और फिर से राक्षस रूप धर कर वज्रदंत को सारा समाचार सुनाया।

ये बातें सुन वज्रदंत हुंकार कर उठा, फिर चूहे के रूप में द्वार के समीप में बिल बना कर घुसने को हुआ, तब गणपति ने अपनी कमर में बंधी धागे को निकाला, उसे फंदा बनाकर फेंक करके चूहे को पकड़ लिया। तब उसके सिर पर तीन-चार बार ठोंग लगाई, फिर उसकी पूंछ पकड़ कर दूर फेंक दिया।

पुत्र गणपति ने जो तेजी के साथ फेंका, उसकी वजह से मूषिकासुर एक साथ अपने राज्य के अंत:पुर के सामने निज रूप में धम्म से जा गिरा। उसकी पत्नी धवला देवी शिवजी की बड़ी भक्तिन थी। उसने देवी को प्रसन्न करके ऐसा वर प्राप्त कर लिया था कि उसके पति की मृत्यु कभी न हो। धवला ने अपने पति को सांत्वना दी, अपने वरदान का समाचार सुना कर उसे हिम्मत बंधाई और उसे समझाया कि आइंदा वह कभी पार्वतीजी की कोई हानि न करे।

* * *

उधर शिवजी त्रिपुरासुरों का संहार करके पार्वतीजी को देखने का कुतूहल लेकर सीधे घर के भीतर प्रवेश करने को हुए। इसपर बालक ने उन्हें भीतर जाने से रोका। शिवजी ने बालक से पूछा–"तुम कौन हो?"

बालक खिल खिलाकर हंस पड़ा और बोला–"मैं अपनी माता का पुत्र हूँ! मायावी और छद्म वेषधारी इधर चक्कर लगा रहे हैं! मेरी माताजी ने मुझे आदेश दिया है कि इस महल के भीतर एक कीड़ा भी घुसने न पावे। इस वास्ते मुझे पहरे पर बिठाया है।"

"मैं ईश्वर हूँ!" शिवजी ने कहा।

मेरा किसी भी देवता के साथ कोई वास्ता नहीं है। मेरी माताजी प्रकृति की स्वरूपिणी हैं! प्रकृति के आदेश का पालन करने से बढ़ कर प्राणी मात्र के लिए कोई दूसरा धर्म नहीं है! माताजी की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य है।" बालक ने स्पष्ट कह दिया।

त्रिपुरासुरों का संहार करने पर शिवजी के पराक्रम की वीर गाथा का गान करते हुए, जयकारों के साथ शिवजी के पीछे चले आये हुए प्रमथ गण और तीन करोड देवता तब तक वहाँ पर आ पहुँचे और एक बालक के साथ शिवजी को वाद-विवाद करते देख वे आश्चर्य में आ गये।

"तुम तो निरे बालक हो! अज्ञानवश यह बताते हो कि ईश्वर नहीं हैं! सारे ब्रह्माण्ड का मूल कारण पर ब्रह्म हैं। वे ही भगवान हैं।" शिवजी ने समझाया।

"आप तो बुजुर्ग हैं! फिर भी लगता है कि आप परतत्व को नहीं जानते! आदि शक्ति के द्वारा यह विश्व और त्रिमूर्ति पैदा हुए। इसका वृत्तांत मैं आप को संक्षेप में सुनाता हूँ; सुनिये!"

"आदि शक्ति ने जो अपनी देह को हिलाया, इस पर जो लाल, नीले व सफ़ेद रंगों वाला तेज निकला, उसी से ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर को उत्पन्न कराया। ब्रह्मा और विष्णु ने देवीजी के आदेशों का

तिरस्कार किया। इस पर देवीजी ने अपना तीसरा नेत्र खोलकर उन्हें भस्म राशियाँ बना डालीं। महेश्वर तो चतुर थे, इसलिए उन्हों ने कहा–"मैं आपके आदेश का पालन करूँगा, लेकिन इसके पहले वह तीसरा नेत्र मुझे दे दीजिए। इसपर देवीजी ने अपना तीसरा नेत्र निकाल कर महेश्वर के माथे पर छिपका दिया। दूसरे ही क्षण महेश्वर ने अपना तीसरा नेत्र खोल कर देवीजी को भस्म किया। जब देवी जलने लगीं, उसमें से अग्निकण छितर कर तेजोमण्डल बन गये। भस्म बिखर कर सारे विश्व में छा गया। इस प्रकार विश्व की सृष्टि हुई। इसके बाद देवीजी थोड़ी देर जल कर पुनः पूर्व रूप में दिखाई दीं। इसीलिए उनको 'महामाया' बताया गया है। इसके बाद देवीजी ने महेश्वर की प्रशंसा करके उन्हें लयकार का वर दिया। फिर ब्रह्मा और विष्णु को उनके भस्मों से बुला भेजा। देवीजी का जो भस्म थोड़ा बचा रहा, उसके तीन हिस्से करके वाणी, लक्ष्मी और उमा की सृष्टि की। इसपर वाणी को ब्रह्मा, लक्ष्मी को विष्णु तथा उमा को महेश्वर स्वीकार करके जगत का पालन करने का देवी ने आदेश दिया और वे अदृश्य हो गईं।

इसपर शिवजी ने कहा–"तुमने जो कुछ कहा, यह एक कल्पित कथा है।"

"अगर मेरी कथा कल्पित है, तो आप ब्रह्मा को एक देवता जो बता रहे हैं, वह एक दंत कथा है; यह में कहूँ तो इसमें दोष ही क्या है? अगर आप यह माने कि यह सब भगवान के द्वारा उत्पन्न है, यह कहने के बजाय, यह कहना ज्यादा सत्य मालूम होता है न कि यह समस्त ब्रह्माण्ड आदि शक्ति के द्वारा उत्पन्न है?" बालक ने पूछा। बालक की बातें सुनने पर विष्णु बालक की प्रशंसा करते हुए मुस्कुरा उठे। ब्रह्मा बालक के तर्क पर मुग्ध हो गये। नारियों के मुखमण्डल दमक उठे। शिवजी का चेहरा लाल हो उठा। वे बोले–"तुम देखने में बालक हो! डरो मत! मैं तुम्हारी
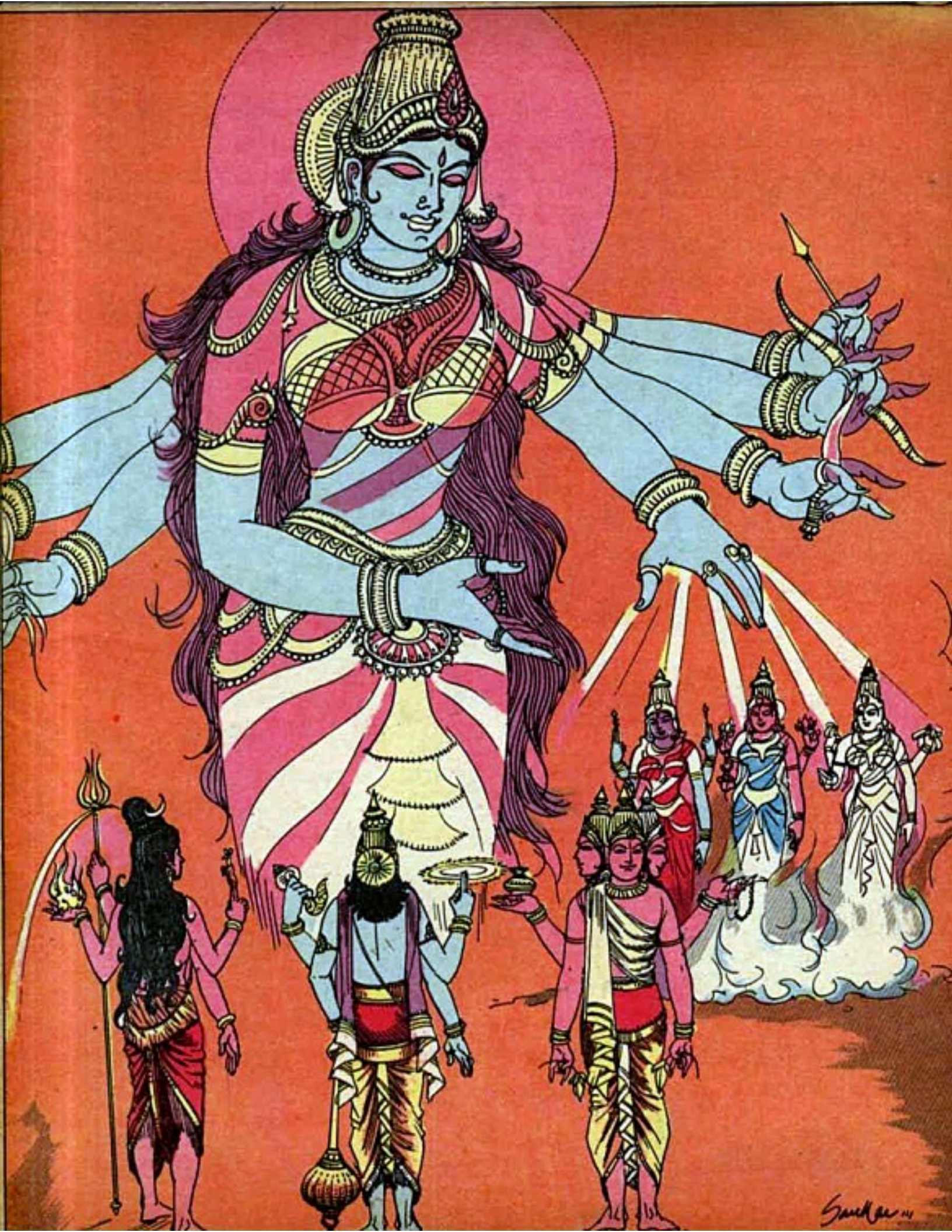
कोई हानि नहीं करूँगा! तुम मेरी बात मान कर द्वार के सामने से हट जाओ!" पर बालक ने निडर होकर कहा-"मेरे कंठ में प्राण के रहते मैं आपको अन्दर जाने न दूंगा।" इसपर शिवजी को बड़ा क्रोध आया। तालियाँ बजा कर उन्होंने प्रमथ गणों को इशारा किया। बालक को पकड़ कर दूर फेंकने के लिए वे लोग आगे बढ़े।

पर बालक ने मंदहास करके कहा-"आप तो मुझे बालक बताकर एक ओर अभिनय कर रहे हैं और दूसरी ओर मेरे साथ जबर्दस्ती अपनी शक्ति का प्रयोग करने के लिए अपने प्रमथ गणों को उकसा रहे हैं; क्या यह उचित है? अच्छी बात है; मैं भी तो गणों का अधिपति हूँ!" यों कह कर बालक ने अपने अंकुश व दण्ड का जमीन पर प्रहार किया। इसपर पुत्र गणपति जैसे रूपधारी हज़ारों की संख्या में पृथ्वी से निकल आये और वे नंदी, भृंगी, भृंगी, चंडीश्वर आदि को अपने हाथों के आयुध अंकुश, गदा पाश और शूलों से उन्हें ऐसे भगाये, जैसे मवेशियों को भगाया जाता है, इसे देख शिवजी के अन्य अनुचर अपने प्राण हाथ में ले भाग खड़े हुए। इसके बाद पुत्र गणपति के गण अदृश्य हो गये।

शिवजी ने रुद्र रूप धर कर अपने त्रिशूल को उठाया। बालक ने अपने अंकुश दण्ड से उसे रोका, तब त्रिशूल दूर जा गिरा। बालक खिलखिला कर हंसते हुए बोला-"मेरी माताजी के द्वारा दिये गये इस दण्ड के मेरे हाथ मे रहते आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। आप जो कार्य करना चाहते हैं, उसे निर्विघ्न संपन्न करने के लिए मैं तैयार बैठा हूँ। इसके बाद की बात माताजी स्वयं देख लेंगी।" यों कह कर बालक ने अपने अंकुश व गदादण्ड को दूर रख दिया। शिवजी ने क्रोधावेश में आकर उन्मत्त की भांति बालक के कंठ को निशाना बनाकर अपना त्रिशूल फेंका। दूसरे ही क्षण बालक "माताजी!" पुकारने लगा, इस बीच बालक का सर कट कर आकाश में उड़ा और एक ज्योति के रूप में चमकते हुए अंतरिक्ष में अदृश्य हो गया।
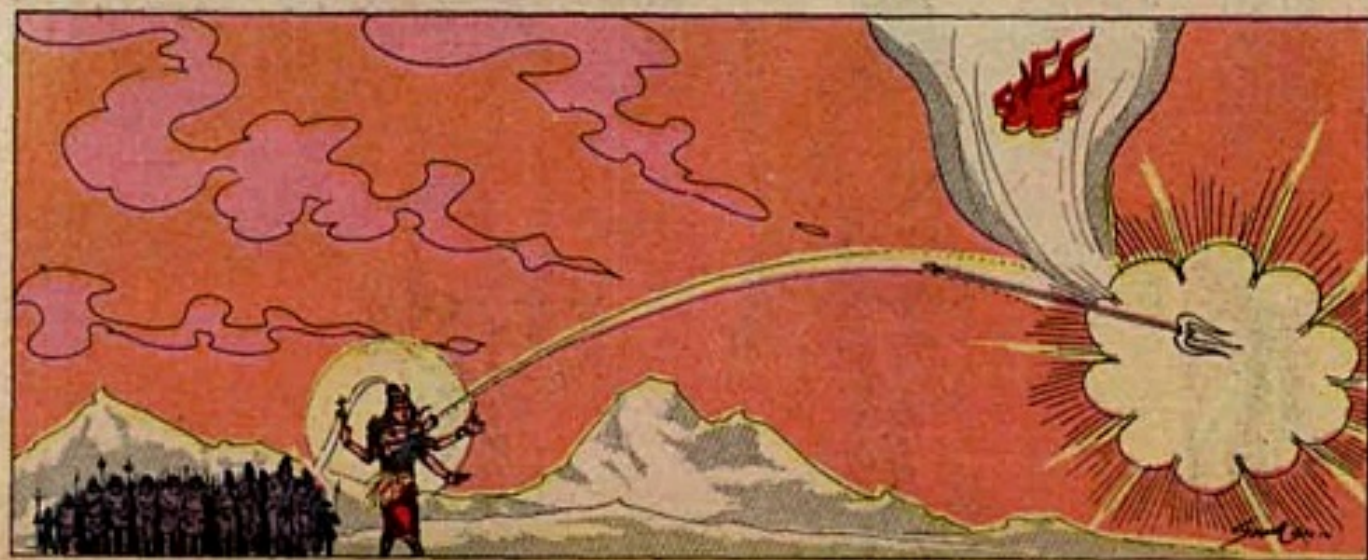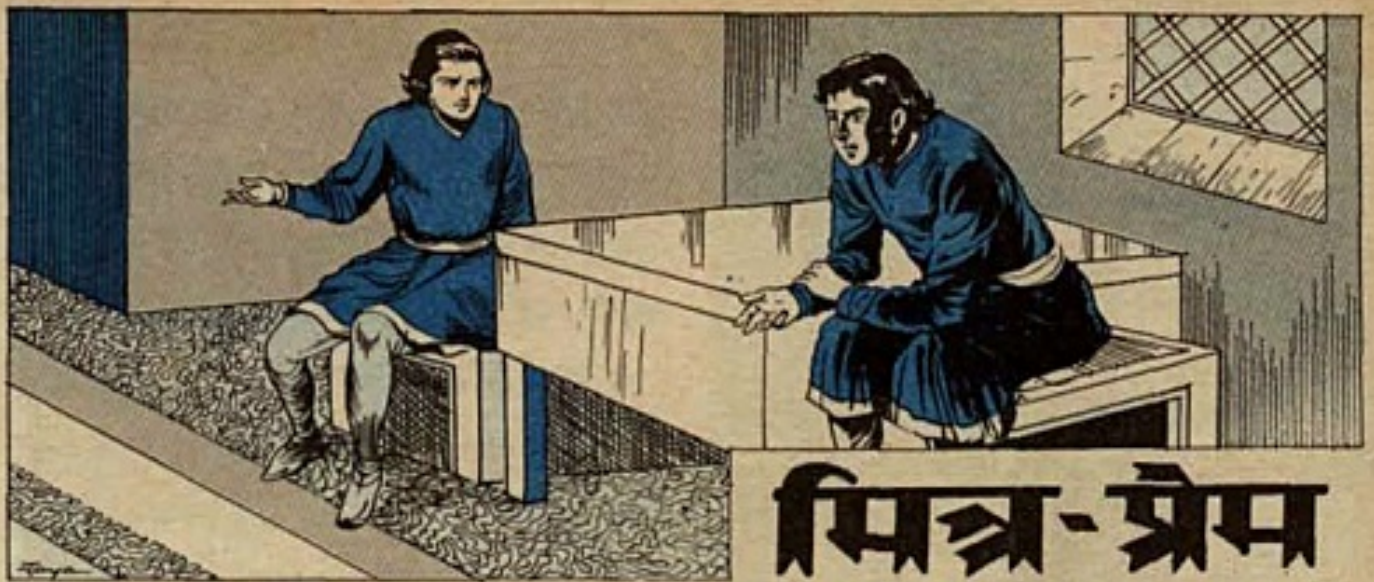
मित्र-प्रेम

गंगा के किनारे एक गाँव में जय और प्रताप नामक दो क्षत्रिय युवक रहा करते थे। वे दोनों बचपन से ही गहरे दोस्त थे। जवान होने तक दोनों विद्याभ्यास पूरा करके किसी राजा के दरबार में नौकरी पाने के लिए दो दिशाओं में चले गये।

जय नामक युवक विदर्भ देश के राजा के अमरावती नामक नगर में नौकरी में लगा और अपने शौर्य और विश्वास पात्रता के कारण राजा को खुश करके ऊँचे पद पर पहुँचा। इसी तरह प्रताप माल्व देश के राजा की राजधानी उज्जैन नगर में नौकरी पाकर यशस्वी हो गया।

बारह साल तक उन दोनों मित्रों को एक दूसरे से मिलने का मौक़ा न मिला। मगर एक भी ऐसा दिन न बीता जब कि उन दोस्तों ने एक दूसरे की याद न की हो। अमरावती से अगर कोई व्यक्ति उज्जैन जाता तो उनके हाथ जय अपने मित्र को अपूर्व उपहार भेजा करता था। इसी प्रकार उज्जैन से अमरावती जानेवाले लोगों के हाथ प्रताप जय को उपहार भेज देता था।

कुछ साल बाद जय के मन में अपने बचपन के मित्र को खुद देखने की इच्छा पैदा हुई। वह राजा से अनुमति लेकर अमरावती से उज्जैन पहुँचा। इस पर प्रताप की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने जय के वास्ते सारी सुविधाएँ कर दीं, मगर उसे लगा कि उसके आदर-सत्कारों का कोई मूल्य न रहा।

जय दिन ब दिन खाना-पीना और सोना तक बंद करके कमजोर होता गया। इसका कारण यह था कि प्रताप के घर में जय ने एक सुंदर युवती को देखा था। तब

२५ वर्ष पुरानी चन्दामामा की कहानी

से वह उस पर मोहित हो हमेशा उसी की चिंता में घुलता गया।

इसे देख प्रताप ने घबराकर पूछा–"जय, बात क्या है? क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है? क्या वैद्य को बुला भेजूं?"

जय ने अपने मन की बात खोल कर रख दी–"प्रताप, तुम से बढ़ कर मेरे लिए प्यारा दोस्त कौन है? मैं सच्ची बात बता देता हूं। तुम्हारे घर में मैंने एक सुंदर युवती को देखा है। अगर उसके साथ मेरी शादी न होगी तो निश्चय ही मैं मर जाऊंगा।"

"उस युवती का नाम मनोरमा है। उसके माँ-बाप मर गये हैं! मगर वह एक बड़ी संपत्ति की वारिस है। मेरे ही घर पल रही है। मैं उसके साथ शादी करना चाहता था; पर तुमने उसके साथ गहरा प्यार किया, इसलिए तुम्हीं उसके साथ शादी कर लो।" यों कह कर प्रताप ने उसे ज़बर्दस्ती मनवाया और मनोरमा के साथ उसका विवाह किया। इसके कुछ दिन बाद जय मनोरमा को लेकर उज्जैन से अमरावती को लौट गया।

थोड़े साल और बीत गये। इस बीच उज्जैन के राजा का देहांत हो गया और युवराज गद्दी पर बैठा। प्रताप के साथ ईर्ष्या रखनेवाले लोगों ने उस पर चुगली खाकर उसे दरबार से हटवा दिया। जल्द ही प्रताप गरीब हो गया। उससे कुछ करते न बना, क्योंकि सभी लोग उसके दुश्मन बन गये थे।

उस हालत में उसे लगा कि जय ही उसकी मदद कर सकता है। यों विचार कर प्रताप अमरावती नगर की ओर चल पड़ा। नगर में पहुँचते-पहुँचते अंधेरा फैल गया। उस अंधेरे में मैले कपड़ों व बिखरे बालों के साथ जय के पास पहुंचने में उसे शंका पैदा हुई कि उस हालत में जय उसे पहचानेगा या नहीं। यों सोच कर प्रताप वह रात बिताने के लिए श्मशान की ओर चल पड़ा।

श्मशान के एक कोने में वह लेट गया। मगर उसे नींद न आई। आधी रात के वक़्त वहाँ पर दो आदमी पहुँचे। उनके बीच वाद-विवाद होने लगा, आखिर झगड़ा शुरू हुआ। अंत में एक आदमी अपनी छुरी निकालकर दूसरे की छाती में भोंकने को हुआ। दूसरे ने झट से अपनी छुरी निकालकर पहले की छाती पर भोंक दी। छुरी से घायल होकर पहला व्यक्ति चीख कर नीचे गिर पड़ा, तब दूसरा व्यक्ति घबराकर प्रताप की दिशा में भाग गया।

उन दोनों व्यक्तियों के लड़ते हुए प्रताप के जैसे कुछ और लोगों ने भी उस रात के वक़्त देखा। वे लोग हत्यारे के भागने की दिशा में दौड़े-दौड़े आ पहुँचे, वहाँ पर प्रताप को देख उन लोगों ने सोचा कि वही हत्यारा है और उसे पकड़ लिया। फिर उसे वे लोग कोत्वाल के पास ले गये। कोत्वाल ने प्रताप को रात भर क़ैद में रखा और दूसरे दिन सिपाहियां के साथ उसे अदालत में भेजा।

प्रताप को जब सिपाही रास्ते पर ले जा रहे थे, तब जय ने उसे पहचान लिया और सिपाहियों से पूछा—"बात क्या है? तुम लोग इसको कहाँ ले जा रहे हो?"

"कल रात को इस आदमी ने श्मशान में एक आदमी की हत्या की है! सुनवाई के लिए इसको हम अदालत में ले जा रहे हैं!" सिपाहियों ने जवाब दिया।

इस पर जय ने उन्हें समझाया—"तुम लोग कहीं पागल तो नहीं हुए हो? श्मसान में उस आदमी की हत्या मैंने की है। इसलिए तुम लोग इसको छोड़कर मुझे अदालत में ले जाओ।"

इस पर झट प्रताप ने कहा—"मैं इस आदमी को बिलकुल नहीं जानता। रात को श्मशान में एक आदमी की हत्या मैंने की है।"

सिपाहियों की समझ में कुछ न आया, वे उन दोनों को अदालत में ले गये। न्यायाधिपति ने दोनों की सुनवाई की, पर
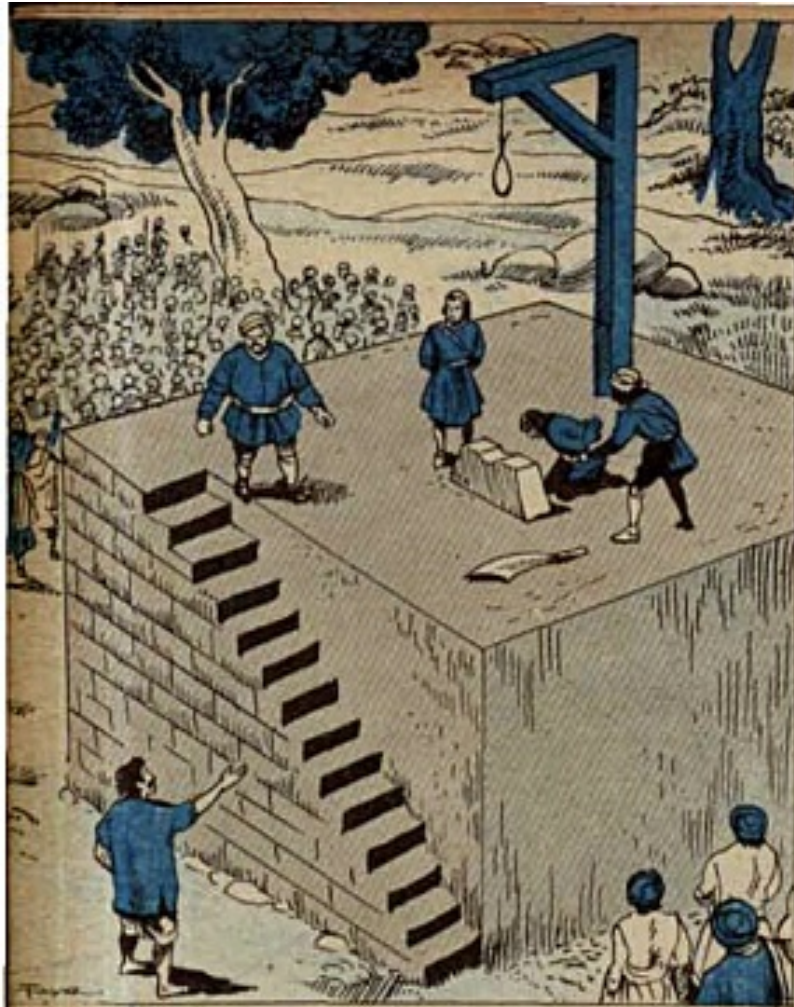
वह यह निर्णय न कर पाया कि सच्चा हत्यारा कौन है? अंत में न्यायाधिपति ने अपना फ़ैसला सुनाया–"इन दोनों में एक हत्यारा है और दूसरा पागल है। सच्चे हत्यारे का पता लगाना मुश्किल है। इस लिए इन दोनों को ले जाकर फांसी पर चढ़वा दो।"

सिपाही उन दोनों को वध स्थान तक ले गये। वहाँ पर आये हुए कोत्वाल को सिपाहियों ने न्यायाधिकारी का निर्णय सुनाया। उस अनोखी फांसी को देखने अमरावती के कई लोग वहाँ पर जमा हुए। उनमें सच्चा हत्यारा भी था जिसे अधिकारी पकड़ न पाये, उलटे दो निरपराधियों को फांसी के तख्ते पर चढ़ाते देख उसका क्रोध उमड़ पड़ा। कोत्वाल के समीप जाकर बोला–"आप का फ़ैसला अंधा है। सच्चा हत्यारा तो मैं हूँ! इन दोनों को छोड़कर मुझे फाँसी के तख्ते पर चढ़वा दीजिए।"

पर बिना सुनवाई के तीसरे को फाँसी पर चढ़ाने का अधिकार कोत्वाल को नहीं है। अब अपराधियों की संख्या दो से तीन हो गई थी, इस पर कोत्वाल तीनों को साथ लेकर अदालत में पहुँचा।

"मैंने तो इस अपराधी की सुनवाई कर के दण्ड जो दिया है?" न्यायाधिकारी ने अचरज में आकर कहा।

"अब एक और हत्यारा हाथ लगा है। आप कृपया इन तीनों की एक साथ सुनवाई कीजिएगा?" कोत्वाल ने निवेदन किया।

इस बार की सुनवाई में जय और प्रताप ने मान लिया कि वे दोनों हत्यारे नहीं हैं।

"जब तुम हत्यारे नहीं थे, तब तुमने अपने को हत्यारा क्यों बताया?" न्यायाधिकारी ने जय से पूछा।

"महाशय, ये प्रताप मेरे दिली दोस्त हैं। इन्होंने मेरे वास्ते अपना सर्वस्व अर्पित किया है। इनको हत्या के अपराध में जब सिपाही पकड़ कर ले जा रहे थे, तब इनको बचाने के लिए मैंने उस अपराध को अपने ऊपर ले लिया है।" जय ने बताया।

"और तुम्हारी कैफ़ियत क्या है? न्यायाधिकारी ने प्रताप से पूछा।

"मेरे मित्र ने जब अपने को हत्यारा स्वीकार किया, तब मैंने उस पर विश्वास करके उसे बचाने के लिए उस अपराध को मैंने अपने ऊपर ले लिया है। बस, यही असली बात है।" प्रताप ने कैफ़ियत दी।

इसके बाद न्यायाधिकारी ने असली हत्यारे की ओर मुड़ कर पूछा—"तुम इसका क्या जवाब देते हो? इन दोनों को फाँसी के तख़्ते के पास लाये जाने तक तुम चुप रहे और अब सच्ची बात क्यों बताना चाहते हो?"

"महाशय, मेरे हाथों से जो व्यक्ति मारा गया, वह पापी और द्रोही है। फिर भी अपनी आत्मरक्षा के लिए ही मुझे उसकी हत्या करनी पड़ी। मैंने ऐसे पापी की हत्या की, इस कारण न्यायपूर्वक आप मेरा अभिनंदन कर सकते हैं। फिर भी आप ऐसा नहीं करेंगे, मुझे फाँसी के तख़्ते पर चढ़ायेंगे। इसीलिए मैं भाग कर छिपा रहा। लेकिन मेरी जगह दो निर्दोष आदमियों को फाँसी पर चढ़ाया जाएगा तो क्या मैं नरक का भागी न बन जाऊँगा? इसीलिए मैंने डर कर अपने अपराध को स्वीकार कर लिया है। मेरे प्रकट होने में कोत्वाल साहब की क़ाबिलियत कुछ भी नहीं है, उनकी असमर्थता ही है।" हत्यारे ने अपना बयान दिया।

इस पर न्यायाधिकारी ने गंभीरतापूर्वक विचार किया और तीनों को मुक्त करते हुए कहा—"तुमने हत्या की, फिर भी तुम क़ाबिल मालूम होते हो! मैं यह समझ गया कि तुमको मुक्त करने पर भी भविष्य में तुम हत्याएँ न करोगे और साथ ही मनुष्यों के प्राणों के प्रति तुम आदर का भाव रखते हो, इसलिए तुम्हें मुक्त करता हूँ।"

इसके बाद जय के साथ रह कर प्रताप ने भी राज दरबार में उसकी मदद से नौकरी पा ली। तब से दोनों मित्र ज़िंदगी भर साथ रह कर अपने दिन आराम से बिताने लगे।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून १९८१ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

B. Murali

★

Gopal Shroti

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ अप्रैल १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

फरवरी के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : **आओ हवा से बात करें।**

द्वितीय फोटो : **पल में सफर को पार करें।।**

प्रेषिका : **वीरबाला,** C/o. रघुनाथ सिंह, वेद प्रकाश मुंशी, म. नं. ३१०, डा. खास

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

A YEARFULL OF READING DELIGHT FROM WALT DISNEY IN
CHANDAMAMA CLASSICS and COMICS
Walt Disney's WONDER WORLD
FIRST TIME IN INDIA
A New Concept
English Fortnightly,
Soon in
Indian Languages too!
WATCH FOR THE NEXT ISSUE

७७७ आकर्षक
पुरस्कार जीतिये
हॉलिडे नेपाल बाल
प्रतियोगिता
विशेष रोटेशन ट्राफी सहित
आश्चर्यजनक शानदार पुरस्कार
विजेता बालक को नई दिल्ली में एक भव्य समारोह जिसमें अनेक विशिष्ट लोग भाग लेंगे, 'स्टार ऑफ हॉलिडे नेपाल' की लुभावनी उपाधि से विभूषित किया जायेगा। विजेता बालक को उसके माता-पिता के साथ दिल्ली से काठमांडू तक मुफ्त हवाई यात्रा की सुविधा दी जायगी। काठमांडू के बेहद आरामदेह होटल स्वीट में ४ दिन और ३ रात तक रहने की मुफ्त व्यवस्था भी होगी... साथ ही खाने, होटल से हवाई अड्डे तक आने जाने, सैर-सपाटे की निःशुल्क सुविधा। और प्रत्येक माता-पिता को कैसिनो नेपाल के सौजन्य से रु० ३०० मूल्य के फ्री प्ले कूपन्स।
५ शानदार प्रथम पुरस्कार
दिल्ली, कलकत्ता, पटना से विजेता बालक को निःशुल्क हवाई-यात्रा। विजेता बालक और उसके माता-पिता को मुफ्त हॉलिडे नेपाल ५-स्टार योजना।
५ अनुपम द्वितीय पुरस्कार
दिल्ली, कलकत्ता, पटना से विजेता बालक को निःशुल्क हवाई यात्रा। विजेता बालक और उसके माता-पिता को मुफ्त हॉलिडे नेपाल ३-स्टार योजना।
१० उत्तेजक तृतीय पुरस्कार
दिल्ली, कलकत्ता, पटना से विजेता बालक को निःशुल्क हवाई यात्रा। विजेता बालक और उसके माता-पिता को मुफ्त २-स्टार हॉलिडे नेपाल योजना।
२५१ सांत्वना पुरस्कार
टार्गेट, इंद्रजाल कॉमिक्स, चंदामामा, पराग, नंदन में से किसी एक पत्रिका (विजेता की पसंद के अनुसार) की १ वर्ष तक निःशुल्क सदस्यता।
५०५ बोनस पुरस्कार
आकर्षक, रंगीन टी-शर्ट।
बेहद आसान पर बेहद
मनोरंजक प्रतियोगिता
आपको बस किसी भी कागज पर काठमांडू के बारे में एक तस्वीर बनानी है। अथवा काठमांडू का एक विवरण लिखना है जो ३० शब्दों से अधिक न हो। इसे इस पत्रिका में संलग्न कूपन के साथ भेज दीजिये।
इस प्रतियोगिता में ८ वर्ष से १५ वर्ष की आयु तक के, भारत में रहने वाले सभी बच्चे भाग ले सकते हैं।
जल्दी करें!
अंतिम तिथि १० अप्रैल
से मान्यता प्राप्त
प्रविष्टि पत्र निम्न पते पर भेजें।
हॉलिडे नेपाल
३०२, होटल अम्बेसेडर, नई दिल्ली-११०००३
टेलीफोन : ६९०३९१/३०२,
टेलेक्स : ३२७७ केबल "कॉनरेसोर्ट"
प्रविष्टि पत्र निम्नलिखित पतों से भी मिल सकते हैं।
होटल मौर्या पटना
साउथ गांधी मैदान, पटना-८००००१
टेलीफोन : २२०६७ टेलेक्स ०२२-२१४
अथवा,
१४४, होटल न्यू केन्लिवर्थ, लिटिल रसल स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००७१ फोन : ४३१७३०, ४४२६४७
अथवा ट्रेवल एजेन्ट
नाम
आयु
पता
इस पत्रिका का नाम
चिन्हित स्थान से काटें
Impressions/H.N. 373

राम और
श्याम

'असली निशाना'

राम, सचमुच
बड़ा लम्बा सफर है.
हाँ, और बड़ी टेढ़ी
सड़क है.

अरे देखो, मुझे लगता है
दाल में कुछ काला...
बड़ा बदमाश लग रहा वह गोलियाँ
बेचने वाला.

वह बेच रहा पॉपिन्स-सी
गोलियां नकली
जो सेहत के लिये बुरी,
पेट भी खराब करतीं.

श्याम,
तुम जाकर
बच्चों को
असली बात बताना

तब तक मैं इसे गिराऊं असली गोलियों से
साध निशाना.
देखो यह कैसा फिसला,
अब आयेगा मज़ा
इसको मिल जायेगी धोखेबाज़ी
की सज़ा

आओ अब बच्चों को
असली पापिन्स खिलायें
असली स्वाद का मज़ा
निराला, इनको बतलायें.